# पंचम अध्याय

## शिवानी की कहानियों में चित्रित नारी समस्याएँ --

## पंचम अध्याय

'स्मृति' से संस्कारित 'न स्त्री स्वातंत्र्य अर्हति' मानने वाले भारतीय समाज में शताब्दियों से नारी उपेक्षित तथा पुरुष के अत्याचारों से पीड़ित रही है। उसके स्वतंत्र अस्तित्व की कल्पना तक किसी ने नहीं की थी। निर्जीव पदार्थों के समान उसका क्रय-विक्रय होता रहा। वह असमर्थ होने के कारण अत्याचार सहती रही। समाज में उसका स्थान 'भोग्यामात्र' रहा था। ऐसी नारी को प्रथम उपन्यास सम्राट प्रेमचन्द ने पूर्ण सहानुभूति प्रदान की और समाज में उसे गौरवास्पद स्थान देने की चेष्टा की।

स्वातंत्र्योत्तर युग में महिला लेखिकाओं ने विशेष रूप से पुरुष लेखकों के स्वर में स्वर मिलाया है। उन्होंने अपने अनुभवों के आधार पर आज की नारी की सामाजिक स्थिति और मानसिकता को बड़ी गहराई से उकेरा है। ये लेखिकाएँ पुरुष लेखकों की तरह नारी को महिमान्वित नहीं करती, उन्हें नकली रूप में पीड़ित भी नहीं करती ये एक विशेष दायरे की नारी की पहचान समस्त परिस्थितियों के साथ उभारती हैं। नारी ने नारी की मन:स्थिति को जिस विशिष्टता से पहचाना है और जिस सुघड़ता से उसको अभिव्यक्ति दी है, वह बड़े महत्व की बात है।

शिवानी ने आज के भारतीय जन जीवन की समस्याओं को अपनी कहानियों में लिया है। इसलिए शिवानी को नये जीवन-मूल्यों और युग संदर्भों की सशक्त लेखिका कह सकते हैं।

आज समाज अत्यन्त तीव्र गति से परिवर्तित हो रहा है। इस बदलते समाज में नारी का स्थान महत्व पूर्ण है। नारी शिक्षा का प्रचार होने के कारण आज नारी भी पुरुष के कंधे से कन्धा मिला कर नौकरी करती है। उसकी आर्थिक स्थिति में भी परिवर्तन आ रहा है। इस परिवर्तन के कारण वह अबला न रहकर सबला बन गई है। राजनीति जैसे क्षेत्र में भी वह अपना योगदान दे रही है। जीवन

के हर एक क्षेत्र में नारी पुरुष के लिए एक चुनौती बन रही है। फलत: नारी संबंधी वे सामाजिक मान्यताएँ बदल रही हैं। संयुक्त परिवार की पध्दति टूट जाने के बाद नारी को अधिक स्वतंत्रता प्राप्त हो रही है और वह स्वाभाविक भी है। आज समाज को विधवा विवाह मान्य है। तलाक जैसी बात कानून से वैध है। अनमेल विवाह या अन्य किसी कारण से पति-पत्नी के संबंध बिगड जाते हैं, तो वे कानून से एक-दूसरे से अलग रह सकते हैं, तलाक के बिना। नारी मुक्ति आंदोलन समाज में बल पकड रहा है। बाल-विवाह पद्धति बन्द हो रही है। दहेज के खिलाफ आवाज उठ रही है। इसी स्थिति में शिवानी नारी को पूर्ण शक्ति से संपन्न देखना चाहती है।

शिवानी ने पहाडी अंचल की नारी-पात्रों को लेकर अधिकांश कहानियाँ लिखी हैं। पहाड़ी जीवन अत्यन्त कठिन होता है। गरीबी,अशिक्षा,बीमारी वहाँ के लोगों को विरासत में मिली होती है। उनकी अपनी कुछ समस्याएँ होती हैं, जिन्हें शिवानी ने अपनी कहानियों में चित्रित किया हैं। इसके अतिरिक्त पढी-लिखी,अभिजात वर्ग की,मध्य वर्ग की नारियों की समस्याओं पर भी उन्होंने अपनी लेखनी चलाई है। उनकी कहानियों में शिक्षा और सौन्दर्य भी समस्या बन कर उभरा है। आज चाहे पढ़ी लिखी,कामकाजी महिला हो या घर की चार दीवारी में रहनेवाली नारी हो,सभी वर्ग की नारियों को विभिन्न समस्याओं का सामना करना पड़ता है। सबसे महत्त्वपूर्ण बात यह है कि स्थूल समस्याओं को दूर किया जा सकता है,परन्तु आज बुद्धिजीवी नारियों के सामने मानसिक समस्याएँ भी [illegible]। उन्हें दूर करना आसान काम नहीं है। [illegible] पंचम अध्याय में नारी-आर्थिक [illegible]रवारिक,सामाजिक,धार्मिक,आर्थिक आ[illegible] [illegible]या है। प्रयास किया है।

(१) <u>विवाह विषयक समस्याएँ —</u>

'विवाह' एक सामाजिक बन्धन होता है जिसमें दो शरीरों का ही नहीं, दो मनों का मिलन होता है। विवाह समाज के स्वास्थ्य के लिए अनिवार्य है। किन्तु इसमें इतनी अनगिनत समस्याएँ दिखाई देती हैं, उन सभी को हम शिवानी की कहानियों में पाते हैं।

BARR. BALASAHEB KHARDEKAR LIBRARY

विवाह पूर्व की समस्याएँ --

आज माता-पिता के समक्ष कन्या के जन्म लेते ही उसके विवाह की समस्या खड़ी हो जाती है। समस्याएँ तो पालन-पोषण, गृहकार्य में उन्हें दक्ष बनाने एवं मानसिक रुप से समृध्द करने की, शिक्षा दीक्षा संबंधी भी होती हैं, किन्तु विवाह की समस्या के आगे ये मानो धूमिल पड़ जाती हैं। यौवन की देहरी पर चरण रखते ही कन्या का विवाह जब तक नहीं होता, वह भार बनी रहती है। आज का नवयुवक सुन्दर, सुशील, गुणवती, रुपसी, पढी लिखी, संपन्न परिवार वाली कन्या से ही विवाह करना पसन्द करता है। तब जो इन गुणों की सीमा रेखाओं के बीच नहीं आती, वे कहाँ जाये ?

प्रौढ़ा अन्य ब्याही युवतियों की समस्या --

बदलती परिस्थितियों ने विवाह की वय में मानो स्वयं ही वृध्दि कर ली है। आज के युग में युवक और युवतियाँ देर से विवाह करना उपयुक्त समझते हैं। पालने में शादी होने के दिन बीत गये हैं किन्तु बढ़ती वय की भी एक सीमा होती जिसे पार करने के बाद युवक अथवा युवती के लिए चुनाव का प्रश्न नहीं रह जाता। एक स्थिति वह आती है कि युवती सोचने लगती है कि उसकी बाँह थामने वाला कोई मिल सकेगा ?

शिवानी की कहानियों इस प्रकारकी प्रौढ़ कुमारिकाओं की समस्या अनेक रुपों में उभरकर आयी है। 'जिलाधीश' कहानी की नायिका सुमन श्रीवास्तव के निम्न मध्यवर्गीय परिवार के कारण या उसकी असाधारण प्रतिभा के कारण रिश्ता बन नहीं पाता। वह जिलाधीश बन गयी है। उसकी मौसी विवाह के लिए गिड़गिड़ाकर कहती है -- " सुमन, इस बार तेरे लिए हीरा ढूंढ़कर लाई हूँ। है दहेजू, पर लाखों का बिजनेस करता है। आरा के समृध्द कायस्थ परिवार का इकलौता बेटा है।"

" क्या कहती हो मौसी, अब ? बूढ़े तोते को रामराम पढ़वाओगी क्या ? जानती हो, मैं कितने साल की हूँ ?"

" कौन कहता है तू बूढ़ी है ? कोई उन्नीस से ज्यादा की बता दे तुझे तो अपनी नाक

कटवा लूँ।'" "और मौसी, मेरी कलक्टरी ?" [१]

सुमन की उच्चशिक्षा यहाँ समस्या बन गयी है।

'दो बहनें' की बड़ी बहन जया, छब्बीस साल की युवती, विश्व विद्यालय में मनोविज्ञान की प्राध्यापिका है जो मातृ-पितृ विहीन छोटी बहन बिजया के लिए अविवाहित है।

'चिर स्वयंवरा' की रजनी दी पचास साल की प्राध्यापिका है। जिस उम्र में उसे नानी-दादी बनना चाहिए था, बालों को कलप लगाकर और नया डेचर लगा कर मानो जवान बन जाती है। सत्यभाषिणी, तत्वनिष्ठ रजनी दी उस पर मोहित डॉ. मेहता से सत्य छुपाकर विवाह को तैयार होती है।

'प्रद्युम्न मुझसे बहुत छोटा था, फिर भी जब उसने एक दिन मुझसे कहा कि वह मुझसे प्रेम करता है, तो पहले मुझे विश्वास नहीं हुआ, किन्तु फिर धीरे-धीरे उसकी मुग्ध दृष्टि, रसपगे सात-सात पृष्ठों के प्रेमपत्र और उसके अज्ञात पौरुष की विजया का मद, मेरी रग-रग में व्याप गया। मेरा अनूठा प्रेमी मुझे एक बार फिर यौवन के उस विस्मृत प्रासाद में खींच ले गया, जहाँ वर्षों तक रहने पर भी मैं अंधी बनी उसके एक से एक मनोहर कक्ष, गवाक्ष आज तक नहीं देख पाई थी।' [२]

'गहरी नींद' की उमा यादव उच्चवर्गीय समृध्द कुल की सुन्दर युवती होकर भी कुंआरी थी, यह संसार के लिए आश्चर्य था। 'पर उमा ने कौमार्य की फाँसी का फन्दा स्वेच्छा से ही गले में नहीं डाला था। पहले जब तक उसके विधुर पिता जीवित थे, एक से एक रिश्ते आते रहते थे, पर उसके पिता की पसन्द और ओहदा, दोनों ऊँचे थे। ऐसे पिता की पुत्री का विवाहाकाश प्राय: ही मेघाच्छादित रहता है। पिता की मृत्यु के पश्चात् उसके विवाह का प्रसंग उठाने वाला भी कोई नहीं रहा। धीरे धीरे उसके चेहरे का आकर्षण घटने लगा। जैसे नेनुए की कोमल त्वचा में पकने पर एक झिल्ली पड़कर सारी मिठास सोख लेती है, उमा की कंचन-सी देह में भी झिल्ली पड़ गई। ... पर उजड़ जाने पर भी दिल्ली दिल्ली ही थी।' [३]

१ करिए छिमा - जिलाधीश - पृ.सं.४० ।
२ चिर स्वयंवरा - चिर स्वयंवरा - पृ.सं.१३-१४ ।
३ चिर स्वयंवरा - गहरी नींद - पृ.सं.८८ ।

SHIVAJI UNIVERSITY KOLHAPUR

'जेष्ठा' कहानी में हरिप्रिया उर्फ पिरी की कुण्डली में जेष्ठा नक्षत्र होने से उसकी सगाई टूट जाती है। उसका प्रेमी पिरी के साथ ही विवाह करने की या जीवन भर कुंवारे रहने की भीष्म प्रतिज्ञा करता है। पिरी डॉक्टर बन कर अपने जेठ की मृत्यु की कामना करते अविवाहित रहती है। दोनों समाज से बेफिक्र खुले आम मिलते रहते हैं —

"इसलिए कि वह मेरे विना जी नहीं सकता और अपनी खूसट माँ से बेहद डरता है। पर हम दोनों के मिलने पर अब विधाता भी प्रतिबंध नहीं लगा सकता, समझी ?"[१]

'के' की नायिका 'के' उर्फ कमला रूप से वंचिता है। उसके जमींदार पिता अपनी कुत्सित पुत्री के वर नहीं जुटा पाए, तो उसे डाक्टरनी बना दिया। 'प्रौढा' के ढलती उम्र में एक नौजवान से विवाह रच लेती है।

इनके अलावा 'तोप' कहानी की 'तोप', [illegible] 'मन का प्रहरी' की अनुराधा पटेल अधिक वय की अनब्याही युवतियाँ हैं, जो दादी बनने की उम्र में विवाह कर लेती हैं।

विवाह पूर्व गर्भ धारण की समस्या —

विवाह के पूर्व प्रेमी प्रेमिकाओं के बीच शारीरिक संबंध किसी भी युग में मान्य नहीं रहा। 'गूंगा' की नायिका कृष्णा अपने ईसाई प्रेमी किकी डिसूजा से पिता के विरोध के कारण चर्च में जाकर चुपके से शादी कर लेती है। क्योंकि कृष्णा नाबालिग थी। यह मानो एक प्रकार से गांधर्व विवाह ही था। दुर्भाग्यवश किकी की दुर्घटना में मृत्यु हो जाती है, 'कृष्णा' के पिताजी ने उसकी शादी अपने स्वजनों में से एक लड़के साथ तय की थी। कृष्णा किकी की बेटे की माँ बनने वाली थी। उसे दिल्ली भेज कर जन्मजात शिशु को अनाथाश्रम में रख कर फिर उसकी शादी कर दी जाती है।

---

१ मेरी प्रिय कहानियाँ - जेष्ठा - पृ.सं.९७।

'जिलाधीश' की सुमन का प्रशंसक,चहेता रणधीरसिंह एकांत स्थल में सुमन पर बलात्कार करता है। किन्तु इसके पीछे उसकी यही भावना थी कि इस रात के बात सुमन अब किसी दूसरे की बन नहीं पायेगी। धीरे धीरे सुमन भी उसे चाहने लगती है और दोनों विवाह करने का निर्णय लेते हैं,उसके पूर्व सुमन गर्भवती बन चुकी होती है।

'भीलनी' कहानी की विलासिनी जिस युवक से विवाह करने का प्रण करती है, उसका विवाह उसकी बड़ी बहन 'सुहासिनी' से हो जाता है। विलासिनी अविवाहित रहती है। एक दिन जीजाजी और वह अपना विवेक खो बैठते हैं और विलासिनी गर्भवती हो जाती है।

'दण्ड' की नायिका चांदमनी विवाहपूर्व संबंध के कारण गर्भवती हो जाने का पता चलते ही उसका प्रेमी डॉ.सिंह उसके गरीब पिता बहुत-सा धन देकर अपनी जिम्मेदारी टाल देता है।

दहेज एक समस्या --

दहेज वैवाहिक जीवन की सबसे बड़ी समस्या रही है। दहेज प्रथा की उत्पत्ति के कारण जीवन साथी चुनने के सीमित क्षेत्र,बाल विवाह,हिंदू लड़कियों के विवाह, अनिवार्य कुलीन विवाह,शिक्षा और व्यक्तिगत प्रतिष्ठा का महत्व,धन का महत्व, है, जिसका लाभ वर के पिता उठाते हैं और वर मूल्य की माँग करते हैं। वर-मूल्य प्रथा में अनेक हानियाँ हैं। वर मूल्य के कारण शिशु हत्या,आत्महत्या,बेमेल विवाह,कन्याओं का दु:खद वैवाहिक जीवन , दो परिवारों में तनाव आदि हो जाते हैं।

दहेज प्रथा का बलि होने वाले नवयुवकों में उच्चशिक्षित युवक अपने माता-पिता के सम्मुख कुछ कह नहीं सकते और अपनी प्रेमिकाओं को त्याग देते हैं।

'दो बहनें' में केशव बड़ी बहन जया से प्यार करता है और उसे विवाह का वचन देकर घर वापस आते समय ट्रेन में एक लखपति की कन्या से सगाई भी कर लेता है। 'सुना, ट्रेन में ही कलकत्ते के एक लखपती प्रवासी से पहाड़ी परिचय हो गया। साथ में उनकी सांवली कन्या थी। लाखों की संपत्ति और इकलौती कन्या

दुर्गादत्त जी का पूत भला यह मौका कैसे चूकता । रंग सुना एकदम स्याह है, पर आजकल तो रुपयों का मुलम्मा चढ़ा मेंढ़की भी परी बनाई जा रही है। ट्रेन में ही सगाई हो गई। ' [१]

यहाँ पर खुद केशव ही दहेज का लालची है। परिवारों के दहेज के प्रति आकर्षण के कारण अच्छे,भले लड़कों का विवाह बदसूरत और मूर्ख लड़कियों से करा दिया जाता है। ' गजदन्त ' कहानी में गिरीन्द्र की माँ के विचार इस प्रकार हैं -- " तुम्हारी माँ ने तुम्हारे जन्म से पहले ही ऐसा सोच लिया है। " तुम्हें कैसे पता ?" " क्योंकि उन्होंने एक नहीं अनेक बार मुझसे कहा है कि जब भी बहू लाएँगी ठोंक-पीट कर ऐसे गृह की कन्या लाएँगी जहाँ लक्ष्मी स्थिर आसन लगा कर विराजमान हो। " [२]

ऐसे पक्के विचार जिस माँ के हैं, उसके सामने गिरीन्द्र अपनी गरीब प्रेमिका के बारे में बात करने का साहस भी नहीं कर सकता, और फिर अन्त में वही होता है, जो सदा से चलता आया है।

" बहू आई और साथ में आया,समुद्र-मंथन से निकला रत्नों का स्तूपाकार अम्बार।

टेलीविजन,गाड़ी,स्टीरियो,इम्पोर्टेड कार,डिनर सेट, चाँदी की कटलरी और सोने का डिकैंटर। उन सबकी चकाचौंध के बीच,अधरों से बाहर लटके गजदन्तों को देखने की न किसी को लालसा थी, न अवकाश। कोई साड़ियों की जरी तौल रही थी,कोई कंठहार के हीरों पर न्योछावर हो रही थी, कोई अनोखे फ्रिज का चिकना कपाट खोल,ऐसी ललक से भीतर झाँक रही थी जैसे नई बहू का घूंघट उठा, सलोना चेहरा पहली बार देख रही है। " [३]

' गिरीन्द्र ' की तरह ' मास्टरनी ' कहानी का नायक ' सुबोध ' भी पिता का आदेश मान कर फियट,फ्रिज लायी लड़की से विवाह करता है। ' फियट गाड़ी की पृष्ठभूमि में नकली घुंघराले केशपाश फहराती आधुनिका भावी पत्नी उसे बेहद प्यारी लगती। ' [४]

---

१ करिए छिमा - दो बहनें - पृ.सं.७८।
२ रति विलाप - गजदन्त - पृ.सं.४४।
३ - वही ,, पृ.सं.५२।
४ चिर स्वयंवरा - मास्टरनी - पृ.सं.२२।

शिवानी जी प्रिय कहानियों से एक `अपराधी कौन` में कमिश्नर श्यामबिहारी और अमला की पुत्री के विवाह के प्रसंग में दहेज का उल्लेख इस प्रकार `सब ही कुछ तो दे रही थी, कनक को। फ्रिज, रेडियोग्राम-फियेट और फिर एक तगडा-सा चैक। बीसियों भूखी शेरनी-सी माताओं के मुख से वह अपने भावी जामाता का पुष्ट ग्रास लुभावने दहेज के बूते ही तो छीन पाई थी। उसकी कनक साँवली थी, पर इस युग में क्या जामाता भावी पत्नी का रंग देखता है? उसे तो अब भावी श्वसुर के ओहदे का रंग ही अधिक आकर्षित करता है। जहाँ तक इसका प्रश्न था, श्यामबिहारी अपने ओहदे के चोखे रंग से किसी भी सुपत्र को चुम्बक की भाँति खींच सकते थे।" १

इस प्रकार देखते हैं कि आज दहेज की सत्ता महत्ता है, पढ़े-लिखे युवक इस व्यथा को दूर करने का प्रयास नहीं करते बल्कि वे और अधिक दहेज चाहते हैं।

अधिक दहेज देकर विवाह करने के बाद भी नारी को क्या मिलता है? सास की झिडकियाँ, पति की उलाहना और घर में एक नौकरानी की स्थिति। ऐसे विवाह के प्रति युवतियों का उदासीन हो जाना स्वाभाविक है। दहेज के कारण माता-पिता का आर्थिक बिखराव, समुचित दहेज न लाने पर वधू पर अमानुषिक अत्याचार, पिता द्वारा दहेज एकत्र न कर पाने के कारण लड़की द्वारा आत्महत्या, या ससुरालवालों द्वारा मार डाले जाना, आदि का वर्णन शिवानी की `श्राप` कहानी में हुआ है।

`श्राप` कहानी की नायिका दिव्या का ससुराल में जो दुखद अन्त होता है, उसके मूल में दहेज प्रथा ही है। दिव्या के पिताजी अपनी बेटी के ब्याह के लिए यथायोग्य रीतियों का पालन करते हैं, ढेर सारी वस्तुएँ भी देते हैं, किन्तु केवल द्वाराचार में कुछ कमी रहने का बहना बना कर दिव्या को ससुराल में तंग करते हैं। विवाह के चार महीने बाद दिव्या के जलकर मरने का समाचार माता-पिता को मिलता है। दिव्या की माँ अपनी सोने की छडी सी बेटी को जलकर कोयला बनी देख उसे पूछती है, " बेटी-कैसे हुआ यह ?" बोली --

---

१ मेरी प्रिय कहानियाँ - अपराधी कौन - पृ.सं.११२।

" अम्मा, हुआ नहीं, किया गया ।" बस आँखें पलट दीं।"[१]

विवाह को अनिवार्य न मानना - एक समस्या --

नारी ने आज पुरुष के साथ कदम मिला कर प्रत्येक क्षेत्र में अपने अस्तित्व को प्रमाणित किया है। एक युग था जब निश्चित वय तक विवाह न होने पर नारी पर समाज की उंगलियाँ उठा करती थीं, किन्तु अब विवाह अनिवार्य नहीं है। समाज में आज भी ऐसी कुमारिकाएँ हैं, जो अपनी युवावस्था अविवाहित रह कर ही व्यतीत कर रही हैं। इस सन्दर्भ में पुरुष की मान्यताएँ भी आज बदल रही हैं। आज वह भी यह स्वीकारने को तैयार है कि जिन्दगी का दूसरा नाम शादी नहीं।

इस तरह की कुमारिकाएँ जिन्होंने आजन्म कुमारिका रहने का निश्चय कर लिया है, वे हैं 'चिर स्वयंवरा' की रजनी दी, 'दो बहनें' की जया, 'मीलनी' की विलासिनी ( दुनिया की नजरों में वह कुमारिका ही है, क्योंकि उसने अपना मातृत्व गुप्त रखा है ) 'जेष्ठा' की नायिका प्रेमी के लिए अविवाहित रहती है, ( यद्यपि दोनों में शारीरिक संबंध स्थापित हो चुके हैं ) 'तोप' की नायिका ढलती उम्र में २०-२२ बरस के लड़के से बिना विवाह के रहती है।

'विप्रलब्धा' की निम्मी सगाई टूटने के बाद अविवाहित रहती है। इस प्रकार शिवानी की कहानियों में विवाह को गौण माननेवाली कुमारिकाओं को जिन समस्याओं का सामना करना पड़ता उनकी मानसिकता को चित्रित किया है।

भावी पति की आर्थिक स्थिति --

आज की युवतियाँ विवाह के पूर्व भावी पति की आर्थिक स्थितियों पर विचार करती हैं। 'चलोगी चन्द्रिका' की चन्द्रिका और चन्द्रवल्लभ एक दूसरे को चाहते हैं, चन्द्रवल्लभ उसे अपने साथ चलने का प्रस्ताव भी रखता है, किन्तु चन्द्रिका आर्थिक स्थिति से संपन्न सदानन्द के साथ विवाह करती है।

---

१ फूलोंवाली - शाप - शिवानी - पृ.सं.९७।

(२) वैवाहिक समस्याएँ --

(१) पति-पत्नी में शैक्षणिक असमानता --

वैवाहिक जीवन स्त्री-पुरुष को बाँध देता है। वैवाहिक जीवन की सफलता तभी है, जब स्त्री पुरुष के हृदय में एक-दूसरे प्रति यथार्थतः प्रेम हो, यथार्थ ललक हो, यदि यह नहीं है,तो पति-पत्नी का जीवान भी व्यर्थ सिध्द होता है। शुरु में होने वाला प्यार कुछ कारणों से कम होता है, जिनमें एक है शैक्षणिक असमानता।

शिवानी की कुछ कहानियों में पत्नी उच्च शिक्षित है,तो पति उससे कम शिक्षित इससे पत्नी के आगे पति की कुछ हैसियत ही नहीं रहती। उदा. 'के' कहानी की के उर्फ कमला डाक्टर है तो शेखर एम.एस.सी.फिजिक्स कर रहा है। विवाह के बाद शेखर का काम 'के' के अस्पताल से लौटने पर उसे खाना परोसना,वक्त पर चाय तैयार रखना,उसके जूते खोल देना आदि।

'अपराजिता' कहानी में नायिका 'आरती सक्सैना' अबकारी विभाग की कलक्टर है तो उसका पति नाम का ग्रेज्युएट,देहाती है। पति को ढोंगी गुरु के जाल से छुड़ा सकने में वह सफल होती है।

'उपहार' में नलिनी कोठारी डॉक्टर है,तो उसका प्रेमी रघुनाथ रिसर्च कर रहा होता है। दोनों के प्रेमविवाह के बाद रघुनाथ रिसर्च छोड़कर नलिनी के साथ रहने लगता है। वह नलिनी के घर आने पर बडी तत्परता से कॉफी बना कर लाता। तब नलिनी सोचती है -' क्या मैंने ऐसे पति की कामना की थी, जो मेरे लिए ट्रे सजा,कन्धे पर झाडन लटकाए मुझे सलामी दे ? यह तो गुणी भृत्य के लक्षण हैं, गुणी पति के नहीं।

' मैं दिन-रात मनाती, कभी तो ईश्वर मेरे निर्वीर्य पति को पौरुष के मद से भर दे, कभी तो मेरा यह आलसी जलसर्प क्रोध की फूत्कार छोड़ सके।'[१]

---

१ करिए छिमा - उपहार - पृ.सं.८५।

बहु पत्नीत्व --

प्राचीन युग में राजाओं की एक से अधिक पत्नियाँ हुआ करती थीं। पाण्डु की दो तथा प्रत्येक पाण्डव की एक से अधिक भार्याएँ थीं। राजाओं की सभी पत्नियाँ मिल कर साथ रहती थीं।

बहु-विवाह की प्रथा प्रचलन बहुत पहले ही खत्म हो चुका है। हिन्दु विवाह अधिनियम सन् १९५५ में पास हुआ, जिसके अनुसार सरकारी कर्मचारी दो विवाह नहीं कर सक्ते हैं।

आज भी कुछ जगह बहु-विवाह क्षीण रूप से जीवित है। उसके कारणों में एक कारण है - पुत्र-प्राप्ति के लिए पहली पत्नी असफल रही है, तो दूसरी और तीसरी लाना। और बहु पत्नीत्व की प्रथा को जीवित रखने के लिए दहेज प्रथा भी कारणीभूत है। गरीब पिता जो कन्या के लिए दहेज जुटा नहीं पाता, किसी भी वर के गले माला डालने को कन्या को मजबूर करता है।

शिवानी की 'ठाकुर का बेटा' कहानी में ठाकुर ख्यात सिंह कत्थे का ठेकेदार, चीड़का ठेकेदार और कुमाऊँ के ओर-छोर तक फैले चाय के बगीचों का मालिक, 'ख्यात कोट' जैसे राजप्रासाद का मालिक है। उसकी दो पत्नियों से चार लड़कियाँ हुईं। ज्योतिषी बतलाता है उसे पुत्र योग है तब एक मातृहीना लड़की से विवाह रच लेता है, कुमायूँ के राजपूत के लिए पुत्र के बिना निरबंसिया जीने से मौत भली है -- यह मिथ्या धारणा, इसके पीछे है।

इस तरह नारी के वैवाहिक जीवन से यह 'बहु-विवाह' या 'बहुपत्नीत्व' की समस्या जुड़ी हुई है इस समस्या के प्रभाव के कारण अनेक नारियों का जीवन कष्टमय हुआ है। समाज के अनैतिकता का प्रचार हुआ है। बिहार में मिथिल ब्राह्मणों को चाहे दरिद्रनारायण हो या बूढ़े खूसट, उसे विवाह के लिए अनेक कन्यायें मिल जाती हैं।

"बहु-विवाह का करने की इच्छा करनेवाला 'रथ्या' का विमलानन्द अपनी पूर्व-प्रेमिका को अपनी दूसरी पत्नी का पद देना चाहता है। "मैं इससे (पहली पत्नी से) कहूँगा, 'मैं वसन्ती बिना जी नहीं सकता सुरसती, तू इसे अपनी मान कर नहीं, तो छोटी बहन मानकर स्वीकार कर' उसे कभी आपत्ति नहीं होगी।' हमारे पहाड़

में कितने ही बड़े बड़े आदमियों की दो-दो पत्नियाँ हैं। "[१]

दुहेजू - समस्या --

बहु-पत्नीत्व की प्रथा कुछ कम हुई नजर आती है किन्तु दुहेजू को बेटी देने माता पिता को कुछ आपत्ति नहीं होती। दहेज प्रथा के कारण अनब्याही लडकियों को दुहेजू को देना पड़ता है। शिवानी की कहानियों में अनेक दुहेजू मिलते हैं उनमें से एक है रवीन्द्र पण्डित गहरी नींद का नायक। उसकी अदम्य यौन-वासना के कारण उसे एक के पश्चात दूसरी और तीसरी पत्नी बासी लगने लगती है।

' पिटी हुई गोट ' में पंद्रह वर्ष की चन्दो साठ वर्ष के गुरुदास की तीसरी पत्नी बनने का कारण भी यही है उस चन्दो की दरिद्रावस्था ऊपर अनाथ होना।

' चांद ' कहानी में उच्चशिक्षित मातृहीना, पिता की इकलौती सन्तान ' मानवी ' पिता की इच्छा के बावजूद स्वेच्छा से प्रौढ़ दुहेजू जे.के.के कण्ठ में वरमाला डालती है।

' घण्टा ' की लक्ष्मी का विवाह बचपन में ही देवेन्द्र से तय हुआ था किन्तु पढ़-लिख अफसर बन जाने के बाद देवेन्द्र एक विजातीय लड़की से विवाह करता है, इधर लक्ष्मी ' दुहेजू ' रुद्रदत्त के साथ विवाह कर लेती है और तीसरे ही महीने में विधवा बन जाती है।

' ज्यूडिथ से जयन्ती ' की नायिका ' रमा दी ' की भी विवाह आर्थिक विपन्नावस्था के कारण दुहेजू से होता है।

प्रेम-विवाह से उत्पन्न समस्याएँ ---

विवाह में प्रेम तत्व मुख्य होता है। " स्त्री-पुरुष का आकर्षण एक प्राकृतिक सत्य है। इसी आकर्षण पर सृष्टि का विकास संबंधों में प्रेमतत्वों को अनिवार्य माना गया है। "[२]

---

१ रथ्या - पृ.सं.४२।

२ अग्रवाल, बिन्दु (डॉ.) हिन्दी उपन्यासों में नारी-चित्रण, पृ.सं.३२७ ।

एक दूसरे के प्रति यह आकर्षण जात-पात,ऊँच नीच,समाज का विरोध सब दीवारों को लाँघ कर विवाह के पवित्र बंधन में बाँध देता है। प्रेम-विवाह अधिकांशत: असफल होते हैं, ऐसी लोगों की सामान्यत: मान्यता होती है। किन्तु प्रेमविवाह में भी परम्परागत या अरेंज्ड मैरेज की तरह सफलता या असफलता दिखाई देती है। प्रेम विवाह असफल होते हैं यह बात सुनी-सुनाई होती है। सच बात तो यह है कि विवाह होता है और समझदारी के अभाव में कोई भी विवाह असफल हो सकता है, केवल प्रेमविवाह नहीं।

सफल प्रेम विवाह का एक अनूठा उदा. है 'जिलाधीश' की सुमन श्रीवास्तव और रणधीर सिंह का विवाह। सुमन की ओर आकर्षित रणधीर सिंह उसे अपनाना चाहता है किन्तु सुमन उसकी अवहेलना करती है। सुमन किसी दूसरे की न हो, इसलिए वह उस पर बलात्कार करके उसके शरीर पर अधिकार जमाता है। बाद में अनुनय-विनय के बाद उसका मन जीतने में भी सफल होता है, जिसकी परिणति विवाह में होती है।

असफल प्रेम विवाहों में 'नथ' की पुट्टी और 'जा रे एकाकी' की चनुली के विवाहों को निर्दिष्ट करना आवश्यक है। पुट्टी के सात्विक सौन्दर्य पर मोहित होकर गुमान सिंह माता, भाई, भौजाई और विधवा बहिन से लोहा लेकर ही उसे ब्याह लाता है। कुछ ही दिनों गुमानसिंह लाम पर जाता है, वीरगति को प्राप्त होता है, पुट्टी का पति सुख अल्पजीवी साबित होता है।

'जा रे एकाकी' की चनुली के सौन्दर्य से मोहित होकर एक कुमाउँनी जवान उसी के साथ विवाह करने का निर्णय लेता है। पुट्टी के पति की तरह चनुली का पति भी युध्द में से नहीं लौट आता। पुट्टी की ही तरह चनुली की सास भी बहू को 'कुलच्छिनी' मान कर जीती-जागती तोप बन कर दिन-रात आग उगलने लगती है।

सफल प्रेम विवाह --

'दो स्मृतिचिह्न' की बिन्दु ने अन्तर्जातीय प्रेम-विवाह किया है और वह अपनी गृहस्थी में सुखी है। 'यह ठीक था कि उसने पारम्परिक शृंखला को दूर कर देवेश जालान से विवाह किया था, पर क्या वह सुखी नहीं थी ? ईश्वर का

वैभव, पति की ऊँची नौकरी, नौकर-चाकर, मोटर, फ्रिज, सब उसके करतल पर धरे थे। ऐसा सुख क्या उसे अपने समाज में मिलता [1]

असफल प्रेम - विवाह की समस्या --

प्रेम-विवाह में असफल नायिकाओं का चित्रण शिवानी की कथाओं में अधिक मात्रा में हुआ है।

' मौसी ' कहानी में नायिका तिला ने आँतरधर्मीय प्रेम-विवाह किया है। मिसेस वेदी बनी तिला ... सपनों का संसार उजड जाता है, पति की उच्छृंखलता से, *तथा* मर्यादाहीन आचरण से।

' के ' की डॉ.कमला उर्फ़ ' के ' और ' मन का प्रहरी ' की प्रा.अनुराधा पटेल दोनों बढ़ती उम्र में अपने से छोटे ( नाती के वयस के ) युवकों से प्रेम-विवाह करती हैं। सच्चे प्रेम के अभाव में शारीरिक मोह के नींव पर खड़ा उनका विवाह रूपी महल चकनाचूर हो जाता है।

' चांद ' कहानी की मानवी का प्रेम-विवाह भी असफल होता है। मानवी शुक्ला और जे.के. के स्वभाव में ही नहीं, दोनों के पितृकुल के रहन-सहन, अदब-कायदों में भी कहीं कोई साम्य नहीं था। एक का स्वभाव उत्तर था, तो दूसरे का दक्षिण।

इस प्रकार स्वभाव के साथ ही भिन्न भिन्न संस्कारों में पले हुए दो व्यक्ति विवाह को निभा नहीं सकते।

' प्रतीक्षा ' कहानी के विमल जोशी और माधवी का प्रेम-विवाह एक दूसरे प्रकार से असफल रहता है। माधवी को जब विवाहोपरान्त पागलपन का फिर से दौरा फिर से पड़ता है, तब उसको इलाज के लिए डॉक्टर के पास छोड़कर उसके तंदुरस्त होने की ' प्रतीक्षा ' में विमल अकेला रहता है।

ये प्रेम-विवाह आँतरजातीय ,आँतरधर्मीय और आन्तरप्रांतीय भी हैं, इन

---

१ कृष्णवेणी - दो स्मृतिचिह्न - पृ.सं.९० ।

बाधाओं के बावजूद ये सफल होते हैं। किन्तु कभी कभी यही बाधाएँ प्रेम विवाह को तोड देने का कारण बनते हैं। जैसे —

` अनाथ ` कहानी में ऐनी का मुक्तेश्वर बैनर्जी से प्रेम विवाह होता है जो विवाह अंतरधर्मीय, अंतर-प्रांतीय है। लोग ऐनी को कुमाऊँनी मानते हैं जब कि उस की माँ नेपाली और पिता आयरिश थे। उसका पति है बंगाली हिन्दू। इस विवाह की वार्ता बैनर्जी के पिता को मालूम होते ही वे अपने बेटे को लेकर बंगाल जाते हैं, उसका दूसरा विवाह भी कर देते हैं।

` गूंगा ` कहानी में हिंदू कृष्णा ईसाई किकी से चुपचाप चर्च में विवाह कर लेती है। ( गान्धर्व विवाह की तरह ) बाद में दुर्घटना में किकी की मृत्यु हो जाती है, और कृष्णा के पिता उसका विवाह अपने जाति के लड़के से करते हैं।

आदर्श अर्थात् पारम्परिक विवाह की समस्या —

यहाँ आदर्श विवाह का तो केवल नाम दियाजाता है, शादी तो पारम्परिक ही होती है। आदर्श विवाह में वहीं कुछ किया जाता है, जो पारम्परिक विवाह में पारम्परिक विवाह करने को तैयार होने वाली कन्याएँ कुछ विवशताओं के कारण ` हाँ ` कर देती हैं, किन्तु तुपश्चात उन्हें कुछ समस्याओं का शिकार होना पड़ता है, जैसे ` चीलगाडी `, ` रतिविलाप `, ` श्राप `।

` गजदन्त `, ` मास्टरनी `, ` दो बहनें `, ` मधुयामिनी `, ` अपराधी कौन `, ` चीलगाडी `, ` भीलनी `, ` दण्ड `, ` रतिविलाप `, ` अभिनय `, ` जोकर `, ` प्रतिशोध `, ` श्राप `, ` भिखारिणी `, आदि कथाओं में विवाह का चित्रण पारंपरिक रुप में किया गया है।

इन विवाहों में कुछ विवाह दहेज की लालच के कारण पूर्व प्रेमिका को त्याग कर किये गए हैं, ( गजदन्त, मास्टरनी, बहनें ), कुछ विवाह मातृहीना कन्या पर विमाता का या अन्य रिश्तेदारों का दवाव आने से हुआ है ( चीलगाडी, रतिविलाप) ` प्रतिशोध `, ` जोकर `, ` अभिनय में पारम्परिक विवाह हुए हैं।

परम्परागत विवाह से अलग विवाह की समस्या --

समाज में कुछ ऐसे व्यक्ति भी होते है,जो परम्परागत विवाह से दूर रहना चाहते है। ऐसा ही एक पात्र है `कैंजा` की नन्दी, तिवारी। नन्दी अपने प्रेमी सुरेश से विवाह कर नहीं पाती ,सुरेश के एक पगली से उत्पन्न पुत्र रोहित को स्वीकार करती है,मरणासन्न,रुग्ण सुरेश से विवाह कर ` विमाता (कैंजा ) का भार वहन करती है।

` चलोगी चन्द्रिका` में चन्द्रवल्लभ पत्नी के चल बसने पर अपनी प्रेयसी(अब विधवा) चन्द्रिका से विवाह कर अपनी इतने सालों की कामना पूरी कर लेना चाहता है, किन्तु चन्द्रिका अब किशोरी चन्द्रिका नहीं है,विराट शरीर,भग्न दंत-पंक्ति,इस तरह आपादमस्तक बदल गई अपनी प्रेयसी को देख कर उसका निर्णय ढ़ह जाता है।

इसके अलावा परम्परागत विवाह से दूर रह कर विधवा विवाह,करने वाले पात्र शिवानी की कहानियों में न के बराबर हैं।

अनमेल विवाह की समस्या --

समाज में अनमेल विवाहों की भी कमी नहीं है। ऐसे विवाहों में कहीं अवस्था ( आयु ) का अन्तर होता है तो कहीं विचारों का। अवस्था का अन्तर अधिक होने पर भी वहाँजीवन सुखी हो सकता है, वहीं विचारों में पार्थक्य न होने की परिणिति सदा ही दुखद होती है। शिवानी ने भी अपनी कृतियों में अनमेल या बेमेल विवाहों की समस्याओं चित्रांकन किया है।

अनमेल विवाह के पीछे भी मुख्यत: दहेज की कुप्रथा ही कार्यरत है, जिसने प्राचीन काल से कतिपय नारियों का जीवन बरबाद किया है। आज की सामाजिक व्यवस्था में दहेज प्रथा इतने भीषण रुप में रुढ हो गई है कि विवाह वस्तुत: दो अनजाने व्यक्तियों को वैवाहिक बंधनों में बाँधने का नहीं अपितु एक व्यापारिक प्रक्रिया का रुप धारण कर चुका है। प्राय: लोग अपनी लड़कियों के लिए योग्य वर इसी लिए नहीं खोज पाते क्योंकि मुँहमागा दहेज देने की उनमें सामर्थ्य नहीं होती है। अपने कर्तव्य से मुक्त होने के लिए वे लड़की को अधिक उम्र वाले या दुहेजू चाहे किसी के भी हाथ में सौप देते हैं।

अनमेल विवाह की असफलता के दो कारण है ––

१) अनमेल विवाह में वयस के अन्तर की समस्या ।

२) अनमेल विवाह में विचारों में अन्तर की समस्या ।

अनमेल विवाह से उत्पन्न समस्याओं का उत्कृष्ट चित्रण शिवानी की 'मन का प्रहरी', 'के', 'छि: ममी तुम गन्दी हो', 'पिटी हुई गोट', आदि कथाओं में हुआ है ।

(अ) अनमेल विवाह में वयस का अन्तर होने से उत्पन्न समस्याएँ ––

'मन का प्रहरी' में ४५ वर्षीय प्रा.अनुराधा पटेल अपने ही एक छात्र १८–२० वर्षीय 'प्रियतम महंती' से विवाह करती है।एक वर्ष के बाद वह इस नतीजे पर आती है "हम दोनों ने बहुत बड़ी भूल की थी, प्रियतम। संसार की कोई भी शक्ति हम दोनों के बीच वयस की इस दूरी को पार नहीं सकती । तुम्हारे लड़कपन को मेरे प्रौढ़ अनुभव का धैर्य कभी नहीं जीत पाया । जैसे अत्याधुनिक शल्यक्रिया में किए गए हृदयारोपण के अनेक प्रयास आज तक असफल ही रहे हैं, एक न एक दिन प्रकृति नवीन अंग को रिजेक्ट कर देती है, ऐसे ही तुम्हारे प्रेम को भी मेरा शरीर जिस झटके से दूर परक चुका है, उसके बाद अब मैं नवीन प्रयोगों में समय,शक्ति और अपना धन गंवाना महामूर्खता समझती हूँ। ... मैं मधुकर के पास जा रही हूँ।" [१]

डॉक्टर कमला बनाम 'के' भी अपने से आधी उम्र के नौजवान किशोर 'शेखर' से विवाह करती है। उसके एहसानों के नीचे दबा शेखर उससे विवाह करने के बाद में अपनी हम उम्र 'किशोरी' के प्रेमपाश में बँध जाता है। अन्त में किशोरी की मृत्यु का कारण बनी 'के'का त्याग करके चला जाता है।

अपराधिनी कथासंग्रह की 'छि:ममी,तुम गंदी हो' में सोलह वर्ष की जानकी को अठचालीस वर्ष का व्यक्ति,सगे छोटे भाई के बदले के खुद के लिए चुनता है।

---

१ गैंडा – मन का प्रहरी – पृ.सं.१३२–१३३ ।

पत्नी से तिगुनी उम्र का पति नवेली पत्नी के लाड प्यार करता है। किन्तु इस ईर्ष्यालु पति के शक्की स्वभाव ने प्रेम की जड़ को कुतरना आरंभ कर दिया। वयस के अन्तर के कारण पति के मन में यह आशंका दिन-रात रहती है कि कहीं जानकी किसी और की तरफ आकृष्ट होकर मुझे छोड़ न जाए। जानकी का किसी के साथ हँसना, बोलना उसे भाता नहीं। पड़ोस का एक लड़का उस की अनुपस्थिति में अगर घर आ जाता तो जानकी को डाँटता था --

" वह क्या कल फिर आया था ? ... मैं तुम्हें लाख बार समझा चुका हूँ, कि उस हरामजादे को घर में मत घुसने दो, फिर भी तुम नहीं मानती। लगता है, तुम्हारे सिर पर मौत नाच रही है। " [१]

जानकी सचमुच उस लड़के की ओर आकर्षित हो जाती है, वह अपनी भावनाओं को काबू में रख नहीं सकती, दोनों पति-पत्नी में इस बात को लेकर झगड़ा होने लगता है। जानकी के दुखों का अन्त करने के लिए उसका प्रेमी जानकी की सहायता से उसके पति को मौत के घाट उतार देता है।

अनमेल विवाह की समस्या का शिकार बनी पन्द्रह वर्ष की चन्दो से " पिटी हुई गोट " में गुरुदास जैसे साठ वर्ष के बूढ़े ने सेहरा बाँधा, वह उसकी अत्यधिक दरिद्रावस्था और अनाथावस्था के कारण। समाज इस अबोध बालिका का ग्रास बनाने के लिए तैयार है। महिम भट्ट गुरुदास को जुए में हराकर चन्दो को अपनी रखैल बनाने के षड्यंत्र में सफल होता है। बूढ़े पति के कारण असहाय चन्दो इस अवस्था को प्राप्त होती है। चन्द्रो की पतिभक्ति भी यहाँ काम नहीं आती, महिम भट्ट कहता है --" तुम्हें ही दाँव पर लगाने का सौदा तय हुआ है। जरूरी नहीं कि तुम्हें हार ही जाएँ। हो सकता है कि तुम्हारी शकुनिया देह की बाजी इन्हें खोए आठ हजार दिला कर, एक बार फिर मेवे की दूकान पर बिठा दे। पर अगर हार गए, तो तुम आज ही की रात से मेरी रहोगी। तुम्हारे जीवन की प्रत्येक रात्रि पर मेरा अधिकार रहेगा। मैं इसका विशेष प्रबन्ध रखूँगा कि तुम्हारे पति की हार और मेरी जीत का भेद प्राण रहते हम तीनों को छोड और कोई भी नहीं

---

१ अपराधिनी - छि:ममी, तुम गंदी हो - पृ.सं.४०-४१।

जान पाएगा । तुम्हारी अटूट पति भक्ति का बड़ा दबदबा है और इससे मुझे बड़ी मदद मिलेगी ।"[1]

"बिन्नू" १० वर्ष की, पति वयस्क । नये परिवेश की घुटन ने बालिका वधू को सहमा दिया, वयस्क पति के उग्र प्रणय-निवेदन के ताप से कोमल कलिका मुरझाने लगी । इसी बीच सास एक दिन उस पर हाथ उठा बैठी । रात को सुप्त पति के अलस आलिंगन से अपने को मुक्त कर, विद्रोहिणी बिन्नू मायके भाग आई और फिर ससुराल गई ही नहीं ।"[2]

(ब) अनमेल विवाह में विचारों में अन्तर से उत्पन्न समस्याएँ —

विवाह में अनमेल वयस या आयु का ही नहीं होता तो स्वभाव या विचार एक दूसरे से भिन्न होने पर भी कई बार ऐसी समस्याएँ उत्पन्न होती है, जब उन्हें हल करने के लिए विवाह-विच्छेद एक मात्र उपाय होता है ।

"चाँद" कहानी में ऐसा ही होता हैं । मानवी जे.के.के जिस कठोर व्यक्तित्व पर रीझी थी, वही धीरे धीरे उसके लिए अभिशाप बन बैठा । मानवी को शोख रंगों से लगाव था और जे.के.लाल रंग देखते ही साँड-सा भड़क उठता, मानवी को तला-भुना, मिर्च - मसालेदार खाना रुचता था, जे.के .ने शायद पत्नी को ही और चिढ़ाने, अपनी अपूर्व इच्छा शक्ति से पेट में अल्सर की छोटी-मोटी नर्सरी बना ली थी, अब वह केवल मूँग की दाल और उबली लौकी खाता था । कभी कोई जलसा होता तो मानवी बड़ा-सा जूड़ा बनाकर बेले का गजरा लगा लेती, और फौरन ही जे.के.तुरुप लगा देता - "क्यों, कोठे में बैठने जा रही है । क्या ?" एक सेर था तो दूसरा सवा सेर, न जे.के.दबता, न मानो झुकती ।"[3]

समाज में अनमेल विवाह के कटु फल आज भी हमे देखने को मिलते है । इस समस्या के परिणाम स्वरुप बहुत-सी नारियों को अकाली वैधव्य आ जाता है या मजबूरी से उन्हें व्यभिचार करना पड़ता है । शिवानी ने इस समस्या का चित्रण

---

१ कृष्णवेणी - पिटी हुई गोट - पृ.सं.८६ ।

२ चिर स्वयंवरा - बिन्नू - पृ.सं.११६ ।

३ अपराधिनी - चाँद - पृ.सं.८९ ।

करके ऐसी अभागिनी नारियों ( विशेष रूप से चन्दो जैसी ) के प्रति पाठकों की संवेदना जाग्रत की है। इस समस्या के समाधान के रूप में अन्तर्जातीय विवाह का भी समर्थन किया जाता है।

अन्तर्जातीय विवाह से उत्पन्न समस्याएँ --

कभी धर्म, जात-पात के दीवारों को तोड़कर प्रेम-विवाह करने में प्रेमी और प्रेमिका सफल हो जाते हैं। किन्तु बाद में पारिवारिक, सामाजिक नीति-नियमों के आगे झुक कर, हार कर वे इस बन्धन को तोड़ देने के लिए मजबूर किये जाते हैं। ऐसे समस्या जिन प्रेम-विवाहों में उत्पन्न होती है ऐसी कुछ कहानियों के उदाहरण देना अनुचित नहीं होगा जैसे -- 'अनाथ' कहानी में ऐनी और बैनर्जी ने अंतर्जातीय प्रेम-विवाह कर लिया। बैनर्जी के पिताजी को यह मालूम होते ही वे वहाँ आकर अपने पुत्र के ले जाते हैं, जिसके परिणाम स्वरूप गर्भवती ऐनी बेसहारा हो जाती है। इसके विरुध्द अन्तर्जातीय प्रेम-विवाह करने में 'दो स्मृतिचिह्न' की बिंदू सफल हुई है, किन्तु सन्तानहीनता के कारण वह दुखी है।

विवाह विच्छेद की समस्या --

सामाजिक एवं कानूनी रूप से पति पत्नी के विवाह संबंधों का समाप्त हो जाना विवाह विच्छेद कहलाता है। पति पत्नी के वैवाहिक एवं पारंपरिक जीवन में असामंजस्य एवं असफलता विच्छेद का सूचक है। दांपत्य जीवन में पति-पत्नी में एक दूसरे के प्रति प्रेम और विश्वास खत्म हो जाता है, तब वैवाहिक जीवन का बन्धन 'विवाह' के विच्छेद की आवश्यकता उत्पन्न होती है।

शिवानी की कहानियों में --

(अ) कानूनी रूप से 'विवाह-विच्छेद' को प्रकट करने वाली एक ही कहानी है 'चाँद' किन्तु --

(ब) कुछ ऐसी कहानियाँ भी हैं जिनके अन्त में विवाह विच्छेद को सूचित किया है।

'चांद' कहानी में मानवी और उसके पति जे.के. में स्वभाव, रहन-सहन, संस्कार इनमें जमीन आसमान का अन्तर होने से घर में नित्य कलह रहता था। इस आग में मानो तेल छिटका गया जब मानवी की अनुपस्थिति में जे.के. घरकी नौकरानी के साथ

रंग रेलियाँ मनाता है और मानवी : दोनों को रंगे हाथों पकड़ती है उसी क्षण मानवी विवाह विच्छेद का निर्णय लेती है। लेखिका उससे कहती है — " आज रात को सोच लो मानो,जीवन भर का रिश्ता ऐसे नहीं तोड़ा जाता..." " मैंने नहीं तोड़ा बहन,वह तो विधाता ने तोड़ दिया है। मुझे मत रोको ।"[१]

विवाह - विच्छेद को सूचित करनेवाली कहानियाँ —

' के' कहानी में प्रौढ़' के' अपने से आधी उम्र के ' शेखर' को एहसानों के नीचे दबा कर,फिर अपने ही घर में उसे रख लेती है। अन्त में उसे विवाहपाश में बँधा देती है। पानी का जैसा नीचे की ओर बहना स्वभावधर्म है, वैसे ही शेखर भी अपनी हम उम्र एक लड़की ' किशोरी' की तरफ आकर्षित होता है। शेखर को अपनी ओर खींच लेने के उद्देश्य से' के ' उस लड़की को आइसक्रीम में जहर मिलाकर खिलाती है। ' शेखर को इस बात का पता चलने पर' के' का मार्ग निष्कंटक नहीं होता बल्कि उसकी दुनिया ही उजाड़ कर शेखर उसे छोड़कर चला जाता है।

' गैंडा' कहानी के अन्त में रोहित अपनी पत्नी सुपर्णा को ही अपनी प्रेमिका' राज' की हत्यारिन मान कर उससे अलग अलग रहने लगता है। सुपर्णा इस सदमें से मनोरुग्ण बनी दिखाई है।

पुनर्विवाह की समस्याएँ —

शिवानी की कहानियों में पुरुषों के ( दुहेजू ,तिहेजू रूप में ) पुनर्विवाह अथवा विवाह-विच्छेद के बाद पति अथवा पत्नी का पुनर्विवाह न के बराबर है। पुरुषों के पुनर्विवाह की तुलना में स्त्रियों के पुनर्विवाह के उदा. नगण्य हैं।

प्रथम विवाह की असफलता के कारण ही समाज में पुनर्विवाह होते हैं। विवाह सफल न होने के कई कारण हैं — पति-पत्नी का परस्पर अनुकूल न होना, दोनों की आपस में न निभ पाना,एक दूसरे के प्रति प्रेम न होना,पति अथवा पत्नी

---

१ अपराधिनी - चाँद - पृ.सं.११० ।

की असमय मृत्यु, इन्हीं कारणों से समाज में पुनर्विवाह होते हैं।

हिंदू संस्कृति की यह एक विडंबना ही है कि पत्नी के मरने के पश्चात पति को दूसरा, तीसरा विवाह करने की सुविधा है, किन्तु पति की मृत्यु के पश्चात पत्नी दूसरा विवाह नहीं कर सकती। इसमें संदेह नहीं कि ऐसे व्यक्ति से, जिसकी पूर्व पत्नी मर चुकी है और पूर्व पत्नी से जिसके कुछ बच्चे भी हों, ऐसे दुहेजू से विवाह करने से लडकियाँ हिचकती अवश्य हैं। फिर माँ-बाप बिना दहेज या कम दहेज में ऐसे दुहेजू को अपनी लड़की का हाथ ( ) हैं।

पुरुषों के पुनर्विवाह के कई उदाहरण शिवानी की कहानियों में प्राप्त होते हैं। जैसे --' गहरी नींद' का रवीन्द्र पण्डित ,' जूडिथ से जयन्ती' का रमा दी का' पति',' पिटी हुई गोट' का गुरुदास आदि।

<u>पत्नी द्वारा पुरुष परित्यक्त --</u>

शिवानी की कहानियों में एक विशेष बात यह देखने को मिलती है कि पुरुष पात्रों ने कभी कानून का सहारा लेकर कभी उनकी अज्ञानता अशिक्षा का सहारा लेकर उनका त्याग किया। (लेकिन पुरुषो के साथ साथ नारियों ने भी घृणा, झूठे इल्जाम ,अत्याचार सहने के बाद ( ) कानून की सहायता लिये बिना त्याग किया है।) जैसे - उपहार, चाँचरी आदि।

' मन का प्रहरी' की प्रा.अनुराधा पटेल प्रौढावस्था में एम.ए.पढ रहे अपने छात्र' प्रियतम महंती' से विवाह करती है। विवाह के एक वर्ष के बाद उसे अपना निर्णय गलत महसूस होता है। प्रियतम महंती जैसे अपरिपक्व पति तुलना में उसे अपना पुराना प्रेमी मधुकर अच्छा लगता है और वह बे-हिचक-आराम से प्रियतम को छोड कर मधुकर के साथ जाती है।

दांपत्य जीवन में कुछ प्रसंगों में पति-पत्नी एक दूसरे का त्याग करते हैं, कानूनी रुप से विवाह का विच्छेद नहीं होता बल्कि रुढार्थ से वे पति-पत्नी भी नहीं रहते। यहाँ पर भी पुरुषों द्वारा या पति द्वारा निष्कासित त्याज्य

नारियों की संख्या अधिक है। निम्नलिखित एक दो प्रसंगों में नारियाँ ही अपने पति को त्याग देती हुई दिखाई देती हैं।

अमीर डॉक्टर नलिनी रघुनाथ से प्रेम विवाह करती है। एक रेल सफर के दौरान एक चोर नलिनी के पैसे, गहने सब कुछ लूट जाता है। रघुनाथ उसकी ओर सन्देह और अविश्वास से देखने लगता है।

" कसम खाकर कहो नलिनी उसने तुम्हें नहीं छुआ ?" उसने मेरे दोनों हाथ पकड़ लिए।

" पागल हो गए हो क्या। देखते नहीं, कम्बख्त नौकर घूर रहे हैं। " मैं ने उसे अँग्रेजी में डपटा, उसने सहम कर हाथ छोड़ दिए, पर उसी दिन से हम दोनों के बीच बर्लिन की-सी अभेद्य दीवार खड़ी हो गई। कितना अविश्वास, कैसी नीच कल्पना मैं घृणा से सिहर उठती। .. इसी बीच विधाता अपना क्रूर परिहास कर बैठा, मेरा अप्रत्यशित मातृत्व ही मेरे लिए अभिशाप बन गया। रघु सुनते ही खूँखार शेर की भाँति दहाड़ने लगा, " डाकू की सन्तान मेरे घर में नहीं पलेगी। " मैं क्रोध से बौखला गई। ढलती उम्र में मातृत्व का कैसा गहरा मूल्य चुकाना पड़ेगा, उसकी चिन्ता मुझे खाए जा रही थी, उस पर शक्की रघुनाथ का निर्वीर्य क्रोध मुझे पागल बना गया।

" घर मेरा है, निकल जाओ बाहर, तुम कमीने पशु हो। "

मैंने कहा।

" और वह सिर झुकाए चुपचाप चला गया। " [१]

परित्यक्ताओं की समस्या —

शिवानी के सत्य कथात्मक संस्मरणों एक संस्मरण है बिन्दू का। बिन्दू का विवाह आठवे वर्ष में हुआ। दसवे वर्ष गौना होने पर वह ससुराल आयी तब वयस्क पति के उग्र प्रणय-निवेदन ताप से तथा सास की मार से विद्रोहिणी बिन्दु मायके भाग आती है। उसने प्रण किया कि जब तक वह डोकरी सास है, तब तक नहीं जायेगी। " कसम खा आए थे हम कि जाएं तो भतार का मुँह खाए। " [२]

---

१ करिए छिमा - उपहार - पृ.सं.८८।

२ चिर स्वयंवरा - बिन्दू पृ.सं.११७।

इस घटना के बीस साल बाद बिन्दू सास के मरने पर ससुराल जाती है।

' अनाथ ' की ऐनी से बैनर्जी विवाह तो करता है, पर पिताजी के आदेश पर कुछ प्रतिकार, विरोध किए बिना गर्भवती ऐनी को बेसहारा छोड कर बंगला जाता है, दूसरा विवाह भी कर लेता है। ऐनी कुमाऊँनी थी। वह अपने बच्चे को ' हिंदू ' माना जाए, यह सोच कर एक हिंदू अनाथाश्रम में रख देती है, अपने मनहूस साये से उसे बचाना चाहती है।

३) विधवा समस्याएँ --

प्राचीन काल में एक पुरुष की अनेक पत्नियाँ होती थीं। पति की मृत्यु के बाद वे सभी विधवा हो जाया करती थीं, किन्तु सती होने का ( अनुमरण का ) अधिकार केवल ज्येष्ठ पत्नी को रहता था। उस समय की मान्यता थी " वैधव्य पूर्व जन्म के पाप का फल है।" विधवायें सर्व कल्याण वर्जिता मानी जाती थीं। विधवा कष्टमय जीवन बिताती थी, किन्तु कुटुम्ब में जैसा विधवा का आदर होता था, वैसा ही समाज में होता है। युध्द में मृत सैनिकों की विधवाओं के प्रति सभी के मन में सहानुभूति पायी जाती थीं।

पहले विधवा नारी पर चाहे जितने अत्याचार किये जाते थे, क्योंकि आर्थिक दृष्टि से वह पुरुष पर आश्रिता रहती थी। पति की मृत्यु के पश्चात् उसे परिवार की आश्रिता बनना पडता था। किन्तु आज स्थितियाँ बदल गयी हैं। विधवा नारी समाज की अवहेलना करके भी अपना गौरवमय जीवन व्यतीत करती है। जब पुरुष विधुर पुनर्विवाह कर सकता है, और समाज में उसे पुन: वही स्थान प्राप्त होता है, जो पहले था, तो नारी ही क्यों बन्धन में जकडी रहे। वह पुनर्विवाह करे या न करे, सुखपूर्वक जीवन व्यतीत करने का तो उसे अधिकार होना ही चाहिए।

शिवानी ने कहानियों में विधवाओं की विविध समस्याओं की कहीं संकेतात्मक कहीं विस्तार से उनका हल बताया है।

' शायद ' कहानी की नायिका कुसुम केवल अठारह वर्ष की उम्र में विधवा हो गयी। कुसुम कक्षा में सर्वप्रथम आती थी, साथ ही सुन्दरी और नम्र बालिका थी।

विवाह के बाद छ: महीने में विधवा हो गई। विधवा कुसुम अपने को सँभल कर अध्यापिका बन जाती है ' कुसुम विधवा थी, पर अपने वैधव्य के कृष्ण-मेघ की छाया से, उसने अपने जीवन-कांश को म्लान नहीं होने दिया था। अधूरी शिक्षा पूर्ण कर वह केवल अपनी योग्यता की बैसाखियाँ टेकती, अब शिक्षा विभाग के एक ऊँचे पद पर पहुँच चुकी थी।'[१]

कुसुम विधवा होने पर भी आदर्श व्यवहार से पूजनीय बनती है। ' संयम और वैराग्य की तिक्त कटु औषधिपान से कुसुम की काया का मृतप्राय सौन्दर्य निश्चय ही द्विगुणित हो उठा था। ... भूले से भी अब कोई उसकी ओर अंगुली नहीं उठा सकता था। न उसे कभी किसी ने हँसते देखा था, न इधर-उधर बैठते फिरते। ... वह अपने कमरे में बन्द या भजन-पूजन में डूबी रहती, या इम्तहान की कापियाँ जाँचती।'

इसी कहानी में कुसुम से सर्वथा भिन्न एक विधवा का वर्णन आया है, जो कुसुम के पिता जल्लाद पाण्डे की मुँह-बोली भाभी थी और वर्षों से देवर भाभी के रहस्यात्मक सम्बंध को लेकर चर्चा होती थी। शिवानी ने विधवा के दो रूप एक ही कथा में चित्रित किए हैं।

' करिए छिमा ' कहानी की बहुचर्चित और प्रिय नायिका हीरावती पतिता है। पतिता बनने का कारण है उसका विधवा होना। अठारह वर्ष में सुन्दर किशोरी हिरु के विधवा होने पर सास और देवर उसे जीना मुश्किल कर देते हैं। बहन के यहाँ आने पर धीरे धीरे वह वेश्या बन जाती है। ' कहाँ से मुँह काला करके लौटी है अभागी ? वहीं क्यों नहीं डूब मरी .... ?'
' डूबने कहाँ दिया मुए परदेशियों ने ? कहने लगे —
' हिरावती, ऐसी हीरे की देह क्या डुबाना भला कौन है ? इसे तो सजाया जाता है।'
यह देखो दीदी चन्द्रहार, हमेल, मूँगे की नेपाली माला सब ले दी परदेशियों ने।'[2]

---

१ कृष्णवेणी - शायद - पृ.१२९-१३० ।

2. करिए छिमा पृ.२० ।

यही पतिता हीराबती, त्याग की मूर्ति, ग्रामबाला ऐसे सत्य को पहचानती है, जो उसकी आत्मा में बसा है। वह श्रीधर की प्रेयसी बनी थी, तब एक याचक की तरह श्रीधर को अपना प्रभु मानती है और क्षमा मांगती है बार-बार

नरेणा नरेणा,
मेरी कहया नी कहया करिया नी करिया
करिए छिमा, छिमा मेरे परभू।'

नारायण हे नारायण,
मेरा किया, ना किया, कहा अनकहा
सब करना छिमा, छिमा मेरे प्रभु।"

'चीलगाडी' आत्मकथात्मक कहानी है। इस कहानी में छोटी बहू विवाहोपरान्त सात महिने में ही विधवा हो जाती है इसकी दोनो जिठानियाँ भी विधवा हैं। इन दोनों का आचरण मर्यादाहीन है। छोटी बहू को उस घरमें आये पाखण्डी स्वामी आत्मानन्द, देवर देबूलला इनके सब की लोलुप कामी दृष्टि से बचना मुश्किल हो जाता है। वह किसी से शिकायत भी नहीं कर सकती --

' फिर एक लम्बे अरसे से वे ( देबूलला ) मेरी जिठानियों के साथ रहते आए थे, कभी किसी को उनके विरुध्द शिकायत नहीं रही थी, मेरे लिए ही वे एकाएक इतने बुरे कैसे हो गए ? फिर मेरे पास सबूत ही क्या था ? कहीं बडी अम्मा भी मुझे गलत समझ बैठी तो मेरा कहाँ ठिकाना रह जायेगा ? जल में रह कर मगर से वैर नहीं हो सकता, फिर मगर क्या एक ही था ?' [१]

छोटी बहू विधवा बनने पर कॉलेज जाकर पढती है। फिर मौका पाकर घर से भाग कर ग्यर होस्टेस बनने का अवसर भी प्राप्त होता है।

' ज्यूडिथ से जयन्ती ' के ' रमा दी ' को देख कर लेखिका की तरह हमें भी लगता है कि रमा दी के साथ विधाता ने जन्म से मृत्यु तक केवल अन्याय ही किया है।' भरी जवानी में उन्हें वैधव्य ने श्रीहीन ही नहीं किया, दीन-हीन भी बना दिया। अबोध पुत्र को

---

१ मेरी प्रिय कहानियाँ - चीलगाडी - पृ.७८।

लेकर वह कहाँ जा सकती थी ? न सास न ससुर न कोई आत्मीय, जो थे उन्होंने औपचारिक सान्त्वना के अतिरिक्त उन्हें किसी भी प्रकार के संरक्षण के लिए आश्वस्त नहीं किया। "[१]

आखिर, रमा दी एक स्कूल में अध्यापिका बन जाती है, पुत्र को इंजिनियर बनाती है। रमा दी की सारी तपश्चर्या विफल हो जाती है, क्योंकि पुत्र विदेशी बहू ब्याह कर उसका गुलाम बन जाता है।

सारांश रूप में शिवानी की विधवाएँ आपत्ति में से मार्ग निकाल कर अपना रास्ता खुद चुनती हैं, जीवन भर अकेली रहती है।

विधवा नारी विवाहित प्रेमी एक समस्या --

"घण्टा" कहानी की नायिका लक्ष्मी विधवा बनने के पश्चात शिक्षा पूरी करके अध्यापिका बनती है। कुछ दिनों बाद गाँव वापस आए पुराने मंगेतर देबूदा के आकर्षण में फँस जाती है। देबूदा विवाहित है, अत: लक्ष्मी अपने समर्पण को गुप्त रखती है। लक्ष्मी द्वारा प्रेम का उदात्त रूप प्रकट हुआ है।

पूर्व प्रेमिका विधवा के प्रति सहानुभूति --

पूर्व प्रेमिका के प्रति "चलोगी चन्द्रिका" के चन्द्रवल्लभ को इतना प्यार है कि उसकी शादी होकर अब वह विधवा बनने पर भी प्रौढावस्था में उसे अपनाना चाहता है। "उसके जीवन में प्रेम केवल एक बार ही आया था ! जो मूर्ति तब हृदय में स्थापित हुई थी, वह अब भी वैसी ही अडिग खड़ी थी।"[२]

विधवा विवाह की समस्या --

विधवा विवाह का चित्रण शिवानी की कहानियों में नहीं हुआ है। विधवा समस्या का समाधान अंशत: ही हुआ, कुछ प्रश्न आज तक बना हुआ है। विधवा विवाह के लिए युवकों के पास शक्ति और साहस का अभाव है, अत: व्यावहारिक क्षेत्र में इस समस्या की गंभीरता आज भी जटिल है।

---

१ वैजा - ज्यूडिथ से जयन्ती - पृ.७० ।

२ गैंडा - चलोगी चन्द्रिका - पृ.७९ ।

४) अवैध मातृत्व और भ्रूण हत्या की समस्यायें ---

नारी जीवन की समस्या के साथ-साथ अवैध सन्तान की समस्या भीअभिन्न रूप से जुड़ी हुई है। एक अविवाहिता का माँ बन जाना, स्वातंत्र्योत्तर कथा लेखकों के लिए एक नयी अनुभूति है। विवाह और मातृत्व का समन्वय स्त्री के लिए सामाजिक रीतियों - नीतियों के अनुसार ही सुविचारी तथ्य रहा है। पुन: नारी की सुरक्षा के लिए भी मातृत्व का सम्बन्ध विवाह से जोड़ा गया है।

कुंवारे मातृत्व की कल्पना भारतीय समाज के लिए नयी है,महाभारत की कुंती को भी इस तरह का मातृत्व प्राप्त हुआ था। उस बच्चे को त्यागने पर ही वह आगे महारानी बन सकी। आज स्थितियाँ बदल गयी हैं। आज की स्त्री आर्थिक रूप से स्वतंत्र है। अत: यदि वह किसी पुरुष से बिना वैवाहिक सूत्रों में बँधे ही मातृत्व प्राप्त कर लेती है ,तो आज के समाज में विवाह के समान्तर ही कोई प्रथा क्यों नहीं निकाली जाती यह प्रश्न महिला लेखिकाओं ने उठाया है।

शिवानी की कहानियों में अवैध सन्तान की समस्या का चित्रण परम्परागत रूप से हुआ है। कुंवारे मातृत्व ( कुमारिका माता ) के कलंक से बचने के लिए समाज के भय से भ्रूण हत्या तक करने को स्त्री विवश हो जाती है। किन्तु उसे जीवित रखना अपनी बेइज्जती समझती है। उसे जो आश्रय देता है, उस पर भी समाज कीचड़ उछालता है।

शिवानी के लघु उपन्यास ` विशाखुली का ढाँट ` की मूल समस्या ` अवैध संतान ` (ढाँट ) है। इसके अतिरिक्त इस उद्देश्य को लक्ष्य में रखकर अनेक कहानियों की रचना की है। शिवानी ने यह भी बतलाया है कि पुरुष चाहे कितना संयमी हो, साधु हो लेकिन यौवन संपन्न नारी को देख कर वह अपने को काबू में नहीं रख सकता।

शिवानी की कहानियों में ऐसी नायिकायें जो अवैध मातृत्व को प्राप्त करती है, उनमें कोई प्रेमी को बचाने के लिए उस सन्तान की हत्या करते दिखाई देती हैं (करिए छिमा ), गांधर्व विवाह की तरह चुपके से विवाह कर लेने के पश्चात,गर्भधारणा होती है ऐसे में पति की मृत्यु, इस परिस्थिति में उत्पन्न शिशु को माता-पिता

की बेइज्जती से बचाने के लिए त्यागती है( अनाथाश्रम में रखती है(जैसे) गूंगा इसप्रकार इन कहानियों में अवैध सन्तान की समस्या ही मुख्य है।

प्राप्त परिस्थिति के अनुसार अविवाहिता माता अपनी सन्तान की हत्या कर देती है, आर्थिक दृष्टि से सबल होने पर उसे दूसरे की सन्तान बता कर पालती है तो असहाय माता - पिता की इज्जत को बचाने के लिए उसे अनाथाश्रम में रखती है। कुछ परिस्थितियों में परित्यक्ता माँ को भी अपनी सन्तान अनाथ बता कर अनाथाश्रम में रखनी पड़ती है।

'करिए छिमा' की हीरावती और 'शिबी' कहानी की 'शिबी' ( शिवप्रिया ) दोनों समाज की नजरों में पतिता है, दोनों को अपने प्रेमी से मातृत्व प्राप्त होता है। सत्यभाषिणी हीरावती प्रेमी के लिए पहली बार झूठ बोलती है —

" जनमते ही उसने आँखें खोली। " हीरावती ने मैली ओढनी से आँखें पोछीं। " मैंने पहचान लिया। अदालत में मैं पहली बार झूठी बनी। तुम्हारी ही कंजी आँखें थीं। वही नाक। वैसे ही टेढे होंठ कर मुसकराया भी था दुसमनिया। सोचा कि मैं तो बदनाम हूँ ही, तुम्हें कीचड़ में क्यों घसीटू ? सारा गाँव तुम्हें पूजता था। बड़ा होता सब पहचान लेते कि किसका बेटा है। " १

कितना अपूर्व त्याग। एक माता प्रेमी की इज्जत बचाने के लिए दिल पर पत्थर रख कर सन्तान को पानी में डुबो देती है।

'शिबी' की बेटी भी हुबहू धरणिधर,उसके प्रेमी की तरह है, किन्तु शिबी उसके गाँव से दूर कुष्ठाश्रम में रहती है, वहाँ पर उसे पहचानने वाला कोई नहीं। फिर वेश्या की सन्तान के लिए पिता के नाम की जरुरत नहीं रहती।

'गूंगा' की कृष्णा और 'भीलनी' की विलासिनी दोनों उच्चशिक्षित,सधन, बड़े घर की बेटियाँ हैं। एक को अपनी अवैध सन्तान को अनाथाश्रम में रखना पड़ता है, तो दूसरी अपनी ही सन्तान को दूसरे की सन्तान बता कर पालती है। कृष्णा ने चोरी - छुपके से किसी से विवाह किया और यह बात गुप्त रखी थी। जब वह गर्भवती थी तभी उसके पति की दुर्घटना में मृत्यु हो जाती है। पिता की इज्जत को

१ करिए छिमा - पृ.३६।

बनाये रखने के लिए कृष्णा उनके आदेशानुसार अपने बेटे को अनाथाश्रम में रख कर दूसरे की पत्नी बनती है।

'भीलनी' की नायिका विलासिनी अपने जीजाजी की ओर पहले से ही आकर्षित हुई थी। उससे उसको मातृत्व भी प्राप्त होती है। लोगों की नजरों में यह व्यभिचार है। वह डॉक्टर है, आर्थिक दृष्टि से अपने पैरों पर खडी है अत: अपने ही बेटी को एक कुमारी माता की सन्तान बता कर पालती है। ( उसकी बेटी भी हुबहू विलासिनी के जीजा की प्रतिकृति थी। ) "फिर मुझे भी यह बच्ची मिल गई - अनायास लब्ध मातृत्व के इस बन्धन ने मुझे भी बाँध लिया। इसी के स्नेह ने मेरे कलुषित अतीत को स्वयं मिटा दिया।" [१]

विलासिनी की बच्ची को देख कर कोई भी उसके जनक को जान सकता था, वह हुबहू अपने पिता की प्रतिकृति थी। समाज से बचने के लिए विलासिनी अपने बेटी को लेकर काबुल की नौकरी को स्वीकार करके चली जाती है। शिवानी की 'स्वप्न और सत्य' यह कथा भी अवैध सन्तान को लेकर ही लिखी है।

वेश्या समस्याएँ --

भारतीय समाज में वेश्या की सत्ता महत्ता प्राचीन काल से ही है। ऋग्वेद में वेश्या का उल्लेख है। अप्सराएँ स्वर्ग की वेश्याएँ हैं। धर्मसूत्रों में और स्मृति ग्रंथों में वेश्याओं के विषय में पर्याप्त विवेचन है। साधारण रुप से सौंदर्य, यौवन और कला कौशल द्वारा धन कमाने वाली स्त्री को वेश्या कहते हैं। वेश्याओं का व्यवसाय परम्परागत होता है।

आर्थिक दृष्टि से पुरुष पर पूर्णतया अवलंबित नारी का उचित सम्मान न पाकर पतित और भ्रष्ट हो जाना स्वाभाविक है। जीवन की विवशताओं के कारण पुरुष के अत्याचारों से पीडित होकर पथभ्रष्ट होने पर जीवन निर्वाह के लिए शरीर का व्यवसाय करने के लिए नारी मजबूर होती है। वेश्यावृत्ति सामाजिक जीवन को विषाक्त बना देती है।

पहाडी और नगर जीवन से जुड़ा हुआ नारी जीवन शिवानी की कहानियों का मुख्य प्रतिपाद्य रहा है। विशेषकर नारी के दो रुप इनकी कहानियों में मिलते हैं। एक तो नगरों की शिक्षित नारी, स्वतंत्रता के बाद, जो अपने घर की

---

१ गैंडा - भीलनी - पृ.७१।

चार-दीवारी के अतिरिक्त भी अपने आप को बाहर के जीवन से जुडी हुई पाती है। नारी का दूसरा रुप वेश्या-जीवन का रुप है। प्रेमचन्द और जैनेन्द्र के उपन्यासों में वेश्याओं का जो रुप दिखाई देता है, उससे अलग है। विशेषकर कलकत्ता के वेश्या-जीवन पर शिवानी ने खुल कर प्रकाश डाला है।

शिवानी की कहानियों में जिस वेश्या-जीवन का चित्रण किया है, वे सभी अभिजात वर्गीय हैं। इस जीवन का उन्होंने बड़ा ही वास्तविक चित्रण किया है। ऐसा लगता है कि उन्होंने ऐसा जीवन जीनेवाली वेश्याओं को निकट से देखा है। शिवानी ने तीन प्रकार की वेश्याओं का चित्रण किया है इनमें से कुछ तो अपने पूर्वजों के पेशे के अनुसार इस कार्य को करती हैं, जैसे --- `धुआँ` की रजुली, `शिबी` की शिबी, `कीर्तिस्तंभ` संस्मरणात्मक कहानी की तिलका आदि। (२) कुछ नाचनेवाली वेश्याएँ हैं जैसे - `बिन्नू`, `रथ्या` की वसंती, `तिलका`, कुछ गानेवाली हैं --- `धुआं` की रजुला `बिन्नू` - नाचनेवाली और गानेवाली दोनों हैं। (३) कुछ शरीर बेचनेवाली - `करिए छिमा` की हीरावती `शिबी` की शिबी ( शिवप्रिया )।

इनमें से कुछ इस पेशे को मजबूर होकर, परिस्थितियों के वश होकर स्वीकारती हैं, जैसे `रथ्या` की बसन्ती, `बिन्नू` की बिन्नू, `हीरावती` तो कुछ अपने पूर्वजों के पेशे के अनुसार इस कार्य को करती हैं जैसे `शिबी`, `धुआं` की रजुला `कीर्तिस्तंभ की तिलका`।

नारी की शिक्षा और अशिक्षा के कारण से उत्पन्न समस्याएँ ---

शिक्षा सच्चे अर्थ में मानव को मानव बनाती है। जीवन-निर्माण के लिए शिक्षा की जरुरत है। नारी को शिक्षा से वंचित रखना याने पूरे परिवार को अंधकार में रखना है। एक पुरुष का शिक्षित होना एक व्यक्ति तक ही सीमित रहता है, किन्तु जब एक नारी शिक्षित बनती है, तब वह पूरे परिवार को शिक्षित बना सकती है। ( शिक्षा के अभाव में नारी की प्रगति मुश्किल है। ) नारी का सर्वांगीण विकास शिक्षा के माध्यम से ही हो सकता है। आज सुशिक्षित युवकों में भी उच्च शिक्षित पत्नी की माँग बढ़ गई है। नारी

शिक्षित होने से उसका विवाह अच्छे परिवार में हो जाता है।

शिवानी को शिक्षित तथा अभिजात वर्गीय पात्रों का चरित्र-चित्रण करने में अधिक सफलता प्राप्त हुई है, क्योंकि वे उन्हीं के बीच रहती थीं। स्वयं शिक्षित, संस्कारवान, तथा उच्च वर्ग से संबंधित होने के कारण इनकी कहानियों की नायिकाएँ भी प्राय: उच्चवर्गीय, संस्कारशील, पढ़ी-लिखी और सभ्य समाज की होती हैं।

किन्तु ज्यों-ज्यों उनका कार्यक्षेत्र विस्तृत होता गया और उन्हें दूसरे वर्गों के सम्पर्क में आने का अवसर मिलता गया, त्यों-त्यों उन्होंने निम्न वर्ग के साथ-साथ मध्यम वर्ग के पात्रों का भी सफल चित्रण किया। इस निम्न वर्ग की नायिकाएँ अधिकांशत: अशिक्षित है, समय आने पर शिक्षित होकर अपने पैरों पर खड़ी होती हैं। उनके सुख-दुख, आशा-निराशा और हार-जीत का उन्होंने निकटता से परीक्षण किया और उसका सूक्ष्मता से चित्रण भी किया है।

उच्चवर्गीय शिक्षित नारियों की समस्या --

डॉक्टर `के` की कमला डॉक्टर है, `उपहार` की नलिनी कोठारी डॉक्टर है, `विप्रलब्धा` की निम्मी डॉक्टर है, `मौलश्री` की विलासिनी डॉक्टर है, `भिक्षुणी` की किकी की ननद डॉक्टर है। `केया` की नलिनी टंडन डॉक्टर है, `जेष्ठा` की गिरी डॉक्टर है।

प्राध्यापिकाएँ -- चिर स्वयंवरा की `रजनी दी, `दो बहनें` की उषा (बड़ी बहन) `मन का प्रहरी` की अनुराधा पटेल, `माणिक` की नलिनी मिश्रा आदि।

अध्यापिकाएँ -- `तर्पण` की पुष्पा पन्त `मास्टरनी` की राजेश्वरी `चलोगी चन्द्रिका` `ज्यूडिथ से जयन्ती` की रमा दी, `शायद` की कुसुम `घण्टा` की लक्ष्मी आदि।

अन्य -- चीलगाड़ी की `मैं` व्यूर होस्टेस, `जिलाधीश` की सुमन श्रीवास्तव जिलाधीश (कलेक्टर) `अभिनय` की जीवन्ती अभिनेत्री। `अपराजिता` की सक्सेना कलक्टर, `निर्वाण` की मनोरमा चोपड़ा आकाशवाणी की निवेदिका, तथा टी.व्ही.की लोकप्रिय तारिका।

इन नायिकाओं में उच्चवर्गीय, शिक्षित डॉक्टर तथा प्राध्यापिका नायिकाएँ आधुनिक नारियों का प्रतिनिधित्व करती हैं। इन नायिकाओं को भी कठिन परिस्थिति का सामना करना पड़ता है, तब वे परिस्थिति को चुनौती मान कर

अपनी शिक्षा के बलपर आर्थिक रुप से सबल होकर उनका डटकर मुकाबला करती हुई नज़र आती हैं।

मध्यमवर्गीय नारियाँ ,जो अनाथ,बेसहारा,परित्यक्ता,विधवा आदि बन गयी हैं, अधूरी शिक्षा को हिम्मत से पूर्ण कर अपनी योग्यता की बैसाखियों पर अपने पैरों पर खड़ी होती हैं।

तृतीय वर्ग की अशिक्षित नारियाँ शिक्षा के अभाव में उदर निर्वाह के लिए या तो वेश्या,पतिता बनी हुई हैं या ससुरालवालों के अत्याचार को सह न सकने से खूनी,हत्यारिन या वैष्णवी बन गयी है।

शिवानी ने नारी के विकास के लिए नारी शिक्षा का विशद महत्व बताया है। अशिक्षित नारियों की दुर्दशा का चित्रण करके आप ने शिक्षा को ही समाज को आगे बढ़ाने का साधन माना है।

अंधविश्वास से उत्पन्न समस्याएँ --

भारत धर्मपरायण देश रहा है। भारतीय संस्कृति धर्मप्राण रही है। शरीर को भारतवासियों ने धर्म का साधन माना है --

'शरीरमाद्यं खलुधर्मसाधनम्।

पारिवारिक,आर्थिक,राजनीतिक जीवन में भी धर्म का प्रभुत्व है। धर्म जब अपनी राह से हट जाता है,तो आडम्बर का ढकोसला बन जाता है। कुछ ऐसे व्यक्ति भी समाज में होते हैं, जो धर्म की आड़ में अधर्म में रत रहते हैं। आज की दुनिया में प्रत्येक क्षेत्र में यही प्रवृत्ति कार्य करती दिखाई देती है।

कुछ कहानियों में शिवानी ने पण्डा और पुरोहितों का वर्णन किया है जिन्होंने अपने स्वार्थ और कामुक प्रवृत्तियों के द्वारा नारियों की परेशानियों को और ज्यादा बढ़ाया है। 'शायद' कहानी में विधवा कुसुम लेखिका के साथ इलाहाबाद कुम्भ-स्नान के लिए गयी थी तब कामी पण्डा का वर्णन --' भीगे काले बालों की चिकनी लटों के छोटे-छोटे कुण्डल-किरीट इधर-उधर लटक आए थे। दोनों हाथों की लम्बी अंगुलियों का अर्घ्य संजोए,वह सूर्य को संगमजल की अंजलि दे रही थी। उसे तिलपात्र कराते,वैष्णवी त्रिपुण्डधारी पण्डा महाराज की स्त्री-लोलुप आँखों से

टपाटप (आंसू टपकते) देख मुझे मन ही मन हंसी भी आई थी। ` [१]

` चीलगाडी ` की नायिका विधवा छोटी बहू प्रयाग के कुम्भ-स्नान के त्रिवेणी तट पर गई होती है,तब उसे भी ऐसा ही अनुभव आता है -- ` अन्तर नहीं था, पुरुष की लोलुप दृष्टि में। जल में डुबकियाँ लगाने पर पतली साडी से झाँकते मेरे देह लावण्य में उस प्रौढ पण्डे की भूखी दृष्टि और झील में तैर कर बाहर निकलने पर मुझे निगलती उस आई.सी.एस. प्रौढ कमिश्नर की भूखी दृष्टि में क्या कुछ अन्तर था ? ` [२]

` चीलगाडी ` कहानी में शिवानी जी ने पाखंडी साधु का विधवा के प्रति अश्लील व्यवहार को दिखाया है। ` चीलगाडी ` में नायिका के घर में कीर्तन-सभा के लिए पधारे एक पाखण्डी स्वामी आत्मानन्द का वर्णन आता है, जो विधवा छोटी बहू को बुरी नजरों से देखता है -- ` मुझसे कहता था ` राधिका। ` जयदेव के पद गुनगुनाता वह निर्लज्ज,कभी बडी अम्मा के सामने ही कहता, ` राधे,मेरे पैर दबा दे। ` ... ` देख क्या रही है, बहू,दाब दे न पैर। ` बडी अम्मा का आदेश मैं कैसे टाल सकती थी ? सिर झुकाए उसके चरण दाबने लगती,तो मुझे लगता असंख्य घिनौने कीडे मेरी हथेलियों में कुलबुलाने लगे हैं। कभी-कभी सब की दृष्टि बचा कर, वह मेरी हथेली अपने पैरों के बीच दबा लेता,उसकी भूखी आँखों की दुनाली से वासना की गोलियाँ दनदनाने लगतीं,दूसरे ही क्षण मेरी कठोर मुखमुद्रा देख,वह नट की फुर्ती से अपने को संयम की रस्सी पर साध लेता और ऊँचे स्वर में गीता के श्लोकों की आवृत्ति करने लगता। ` [३]

शिवानी की कहानियों में अनेक संन्यासिनी नायिकाओं का उल्लेख मिलता है , जो पति,सास द्वारा सतायी जाने पर या तो हत्यारिन बन जाती है,या संन्यासिनी। इसकी एक झलक यहाँ प्रस्तुत है।

---

१ कृष्णवेणी - शायद - पृ.१३०।
२ ,, चीलगाडी पृ.७६।
३ ,, ,, पृ.७८।

शिवानी की कहानियों में अपने पापों का प्रायश्चित करने के लिए या अपने प्रिय व्यक्ति को खोने पर विरक्ति के कारण नारी सन्तनी ( वैष्णवी ) बनी दिखायी है। ` अलख माई ` की वैष्णवी बनी माई जब चौदह साल की थी तब ससुराल जाने पर सास और पति की मार-पीट से तंग आती है, एक दिन गुस्से में वह घाटी के ऊपर से सास, पति और भैंस को नीचे ढकेल कर मार डालती है। तत्पश्चात एक नेपाली बाबा की दीक्षा लेती है, भिक्षा माँग कर खाना-पीना, प्रायश्चित के रुप में स्वीकार करती है।

` धुआँ ` की रज्जुला अपने प्रेमी की मृत्यु के बाद संन्यास लेके गोरखपंथी बन जाती है। ` लाटी ` की बानो आत्महत्या के बाद बचने पर वैष्णवी बन जाती है।

बहुत-सी समस्याएँ ज्योतिषियों के कारण भी उत्पन्न हुई हैं।

शिवानी ने दो नायिकाओं की दुखद् अवस्था दिखायी है, वे हैं - ` पिरी ` और ` बसन्ती ` । ` मधुयामिनी ` कहानी में इस अंधविश्वास का वर्णन इस प्रकार है -- इस वर्ष माघमास में देवगुरु सिंहस्थ हो जाने से दो जून का विवाह-लग्न ही अन्तिम लग्न है, ऐसी ही कुछ घोषणा कर कूर्मांचल के गण्यमान्य पंडितों ने कन्यादाय ग्रस्त पिताओं की नींद हराम कर दी थी। परंपरा से कूर्मांचल में सिंहस्थ गुरु लग्नादि के लिए वर्जित रहा है। [१] ` पिरी ` के पिताजी सुंदरी पुत्री की कुण्डली भेज देते हैं - ` उसी संध्या को खोटे सिक्के-सी कुण्डली लौट आई तो उनका माथा ठनका। ...अल्मोडा भर की कुंडलियों की रेखाओं का लेखा-जोखा रखने वाले भट्टजी ने कुंडली का भेद खोल दिया ` जहाँ जहाँ पात्र से बडा भाई होगा वहाँ वहाँ से कुंडली ऐसे ही लौट आएगी पंतजी, कन्या का जेष्ठा नक्षत्र है। ` [२]

कुंडली के जेष्ठा नक्षत्र के कारण पिरी और उसका प्रेमी, प्रेमी की मृत्यु तक विवाह नहीं कर पाते।

` रथ्या ` में बसन्ती और विमलानन्द एक दूसरे को चाहते हैं, किन्तु विमलानन्द के पिताजी बसंती की कुण्डली में वैधव्य योग्य देख कर ` ना ` कहते हैं --

---

१ मेरी प्रिय कहानियाँ - मधु यामिनी - पृ.१३२।

२ ,, जेष्ठा पृ.९०।

'भरपूर नाडी वेद षडाष्टक योग पड रहा है। जानबूझ कर तुम दोनों को कैसे गहरी नदी में ढकेल दूँ।' और फिर दूसरे ही दिन बसंती की कुण्डली खोटे सिक्के-सी फेर दी गई थी।'[१]

आश्चर्य तब होता है जब पढी-लिखी, आधुनिक कही जानेवाली महिलाएँ भी जादू-टोने के चक्र में फँस जाती है। 'चाँद' कहानी में मानवी उर्फ मानो उच्च शिक्षित, संस्कारी नारी होकर भी झाड-फूँक करने वाले के पास अपनी मरी हुई सौत का भूत भगाने के लिए जाती है।

'गैंडा' लघु उपन्यास में नायिका सुपर्णा अपनी सखी के साथ सौतिया डाह से इतनी घृणा करने लगती है कि उसे खत्म करने के लिए एक मौलवी का सहारा लेती है।

'जेष्ठा' की पिरी उर्फ हरिप्रिया नास्तिक होतीहै, डॉक्टर भी बन जाती है। उसके जेष्ठ नक्षत्र के कारण जेठ के रहते उसका विवाह उसके प्रेमी देवेश के साथ नहीं हो सकता। दोनों प्रेमी एक दूसरे की खातिर अविवाहित रहते हैं। जाखनदेवी की महिमा सुन कर आखिर पिरी अपने जैठ राजेश की मृत्युकामना के लिए मन्दिर में धूप-दीप जलाती है।

'मन के प्रहरी' की नायिका प्रा.अनुराधा पटेल और 'निर्वाण' की मनोरमा चोपडा जैसी नायिकाएँ ढोंगी साधु और महाराजों पर विश्वास करती दिखाई गयी हैं।

निर्धनता से उत्पन्न समस्याएँ —

शिवानी ने पहाडी (कुमायूं) प्रदेश के परिवेश की कहानियों में पहाडी लोगों की निर्धनता के कारण निर्मित समस्याओं का चित्रण पर्याप्त मात्रा में किया है।

आम तौर पर पहाडी लोगों की निर्धनता का कारण वहाँ के अर्थार्जन के साधनों का अभाव ही है। निर्धनता के कारण ही अशिक्षा, अन्धविश्वास, रुढि-परम्परावाद आदि पनपते हैं। निर्धनता दहेज प्रथा का मुकाबला नहीं कर सकती। अतः सुन्दर लडकियाँ छोटी उम्र में वयस्क किन्तु धनी, बूढों को समर्पित की जाती हैं। यह समस्या का यहीं पर समाप्त नहीं होती। यह अनमेल विवाह असमय वैधव्य, तथा अवैध संबंध, व्यभिचार जैसी समस्याओं को जन्म देता है।

१ मेरी प्रिय कहानियाँ - जेष्ठा - पृ.१८।

'पिटी' हुई गोट' में पन्द्रह वर्ष की चन्दो को रुपयों के बल पर बूढ़ा गुरुदास पा सकता है। चन्दो के माता-पिता पिठौरागढ़ के अग्निकाण्ड में भस्म हो गये, थे कभी उसने चावल चखे भी नहीं थे..... उस अनाथ सरल बालिका को उसके ताऊ ने गुरुदास के गले में बाँध दिया। ऐसे बूढ़े पति को चन्दो परमेश्वर मानती है --

'उसे सचमुच ही पति के प्रति अनोखा लगाव था। उस लगाव में प्रेम कम कृतज्ञता ही अधिक थी। ... जिसे जीवन के पन्द्रह वर्षों में मिठाई तो दूर, भरपेट अन्न भी न जुटा हो, उसके लिए नित्य जलेबी का दोना पकड़ाने वाला पति परमेश्वर नहीं, तो और क्या होता।'[१]

'चलोगी चन्द्रिका' में चन्द्रिका गरीब चन्द्रवल्लभ से अमीर सदानन्द के साथ विवाह करना उचित समझती है।

'दण्ड' की नायिका चाँदमनी से वह निर्धन संचाल कन्या होने के कारण डॉ. सिंह उससे जी भरके खेलता है ( विवाहपूर्व संबंध रखता है ) ? जब वह गर्भवती हो जाती है, तब उसके गरीब पिता को बहुत-से रुपये देकर अपना पीछा छुड़ा लेता है।

'के' की नायिका डॉ. कमला उर्फ 'के' निर्धन शेखर से अपने वैभव संपत्ति के बलपर बेमेल विवाह रचाने में सफल होती है। निर्धनता का असर केवल नारियों पर ही नहीं पड़ता, कभी कभी युवक भी इसके चंगुल में फंस जाया करते है उपर्युक्त उदाहरण से स्पष्ट है।

आभूषणप्रियता --

आभूषण, अलंकार स्त्री की कमजोरी होती है। कभी कभी अलंकारों का अत्यधिक मोह उस स्त्री के साथ साथ सब को उलझन में डाल देता है। 'अपराधी कौन', साधो ई. मुर्दन के गाँव' में आभूषण प्रियता की समस्या दिखाई देती है।

'अपराधी कौन' इस कथा में मीना और अमला पूर्वाश्रम की सहेलियाँ अब ननद-भाभी बन गयी है।

---

१ कृष्णावेणी - पिटी हुई गोट - पृ.सं.८२-८३।

" दोनों एक-से कपडे पहनती हँसती-खिलाखिलाती एक-दूसरी को बाँहों में लिए फिरती रही, फिर जैसा प्राय:ऐसी प्रगाढ मैत्री का अन्त होता है, वैसा ही हुआ। अचानक दोनों में ऐसी ठनकी कि आँखों ही आँखों में नंगी तलवारें लपलपाने लगीं और दो टूटे हृदयों की दरार,मीना की विदा तक नहीं जुडी। झगडे का सूत्रपात हुआ था आभूषणों को लेकर। "

मीना अम्मा के पास एक सोने की सुन्दर करधनी है,मीना और अमला दोनों को वह चाहिए थी। तब पहले अमला अम्मा के बक्से में से वह चुराती है। बीस साल बाद मीना मायके आने पर वह भाभी के शीशम के बक्से में वही करधनी देख कर उसे चुराती है। जब वह मायके से वापस जा रही होतीहै, तब उसे पता चलता है कि फिर भाभीने वह करधनी और उसके साथ साथ मीना का अस्सी हजार का हार भी चुराया है। इसप्रकार आभूषणों के कारण बडे घर सुशिक्षित नारियाँ भी किस स्तर को पहुँचती हैं, यह शिवानी ने अपनी कहानियों में दिखाया है।

यह हुई सधन परिवार की स्त्रियों की आभूषण प्रियता। किन्तु साधो ई मर्दन के गाँव में दस्यु दल की पटरानी की आभूषणप्रियता की कहानी है, उसका डकैत पति उसे नित्य नवीन आभूषणों से जगमगा देता। एक बडे-से कडाह में सोने के चोरी के आभूषणों को गलाया जाता। फिर स्वर्णराशि से नवीन आभूषणों की सृष्टि होती। एक दिन उसके पति एक अनोखा जडाऊ रत्नों का हार लाया। पत्नी ने पति की अवज्ञा करके उस हार को गलवाने नहीं दिया। उसकी इस हवस से पुलिस दोनों को पकडती है। दोनों को सजा हो जाती है।

कुरुपता सुन्दरता से उत्पन्न समस्याएँ --

कुरुप होना यदि नारी के लिए एक समस्या है,तो सुन्दर होना उतनी ही बडी समस्या है। यह शिवानी की कहानियों को पढकर हुआ है।

भीलनी की दो बहनें,बडी बहन सुहासिनी कुरुप है तो छोटी विलासिनी अत्यंत सुन्दर। छोटी बहन का सौंदर्य सुहासिनी के विवाह में बाधा बन जाता है। विलासिनी को छिपा कर रखने पर सुहासिनी की शादी तय हो जाती है। जब विलासिनी विवाह से पहले ही उसके पति को देखती हैं ,तब उसे लगता है कि

इतना सुन्दर लड़का दीदी के साथ शादी नहीं करेगा । वह इतनी आकर्षित होती है कि उसीके साथ विवाह करने का अथवा आमरण अविवाहित रहने का प्रण करती है ।

इस बात से बेखबर सुहासिनी का विवाह हो जाता है । विवाहोपरान्त विलासिनी के अनुपम सौंदर्य से जीजाजी उस पर रीझ कर संबंध प्रस्थापित कर लेते हैं, जिसके परिणामस्वरूप सुहासिनी की सफल गृहस्थी उध्वस्त, नष्ट हो जाती है ।

पन्द्रह साल की चन्दो का साठ साल के बूढ़े से विवाह होता है । उसके सौन्दर्य को देख कर मन्दिर के रास्ते में उसे प्राय: ही डिगरी कॉलेज के मनचले लड़के 'वैजयन्तीमाला' कह कर छेड़ भी देते उसी गाँव जुआरी, कामी महिमा भट्ट भी उसकी ओर वासनामय दृष्टि से देखता है । उसे प्राप्त करने के लिए एक षड्यंत्र रचा कर पति से चन्दो को छीन कर अपनी रखैल बना लेता है ।

'चाँद' जैसी वेश्या अपने सौंदर्य का नाजायज फायदा उठाकर निम्न वर्ग के पुरुषों के साथ भले घर के पुरुषों को भी दीवाना बनाने में खुश होती, जिसके उनकी बसी-बसाई गृहस्थी उजड़ जाती है ।

शिवानी की कहानियों में कुछ नायिकाएँ ऐसी भी हैं जो अपरुप सुन्दरी होती हैं, समय का भी उनके सौंदर्य पर असर नहीं पड़ता जैसे 'उजड़ जाने पर भी दिल्ली दिल्ली ही थी ।' उदा. उमा यादव का सौन्दर्य... 'उमा यादव का यौवन अब बीत चुका है, किन्तु वह अब भी सुन्दरी है, जैसे उजड़ जाने पर भी दिल्ली दिल्ली ही थी ।'

उसी गहरी नींद' कथा में अख्तरी नाम वेश्या का वर्णन इस प्रकार है — 'अख्तरी का आकर्षण उसके चेहरे का नहीं, उसकी देह का था । वह छोटे कद थी, किन्तु उसका प्रत्येक अवयव उसी कद के अनुसार गढ़ा गया था । छोटी-सी नाक पर वह एक बड़े से नग की लौंग पहने रहती थी । दोनों होंठ रसीले और खूब मोटे वैसे होंठ जो कलाकार को नहीं, प्रणयी पुरुष को प्रिय होते हैं ।'[१]

---

१ चिर स्वयंवरा - गहरी नींद - पृ.८६ ।

विधवाओं का सौंदर्य उनके लिए शाप बनता है,उदा.घण्टा की लक्ष्मी का सौंदर्य उसे पतन की मार्ग पर ढकेल देता है।

कुरूपता -

'मीलनी' की सुहासिनी और 'अलग माई' की माई लक्ष्मी' अपनी कुरूपता के कारण गृहस्थी से हाथ धो बैठती है।

दांपत्य तथा पारिवारिक जीवन की समस्याएँ --

दांपत्य जीवन पारिवारिक जीवन का मूलाधार है। स्त्री और पुरुष का विवाह ही परिवार की आधारशिला है। पति पत्नी का पारस्पारिक स्नेह एवम् प्रेम ही दांपत्य जीवन में हँसी-खुशी के फूल खिलाता है। दाम्पति के नित्य प्रति कलह नई नई समस्याओं को जन्म देता रहता है। दांपत्य जीवन की समस्याओं पर आधारित शिवानी की कहानियाँ है - के,उपहार,केया,गहरी नींद, लाल हवेली,चाँद,पिटी हुई गोट,प्रतिज्ञा ,लाटी,मीलनी,बन्द घड़ी,प्रतिशोध, अपराजिता,निर्वाण,मन का प्रहरी आदि।

'के' और' मन का प्रहरी कहानियों में वयस की असमानता के कारण दांपत्य जीवन असफल बनता है। 'उपहार' कहानी में पति रघुनाथ का निर्दोष पत्नी के प्रति सन्देह और अविश्वास उनका गृहस्थ जीवन समूल नष्ट कर देता है। 'केया' कहानी में डॉ.नलिनी का और उसके के पति का दांपत्य जीवन असफल बनता है - नलिनी के प्रति की कुरुपता (बौना कद,श्याम वर्ण और भैंजी आँख ) और शक्की स्वभाव के कारण 'प्रतिशोध' गहरी नींद' तथा' चांद' कहानी में अवैध संबंध रखनेवाले पति के कारण दांपत्य जीवन बिखरता हुआ दिखाई देता है। 'प्रतिज्ञा' और' लाटी' कहानियों में नायिकाओं की बीमारी के कारण दांपत्य जीवन खतरे में पड़ता है। के विभाजन के कारण नष्ट हो जाता है।

इस प्रकार इन कहानियों में दांपत्य जीवन की विविध समस्याओंका समना करती हुई नारियों के दर्शन होते है।

दांपत्य जीवन के बारे में लेखिका का यह कथन भी द्रष्टव्य है --

' वैसे तो प्रत्येक सुखी दांपत्य जीवन के लिए कलह का अस्तित्व भी एक प्रकार से अनिवार्य है। जीवन भर आकण्ठ प्रेम में डूबे दम्पत्ति कभी वैवाहिक जीवन के सच्चे सुख को नहीं जान पायेंगे। एक न एक दिन उनके इस प्रेम-प्रदर्शन में बनावटी अभिनय का पुट स्वयं ही आ जाता है। ' [१]

शिवानी की अधुनातन कहानी 'चांचरी' में श्रीनाथ और बिन्दी का दांपत्य जीवन ननद के झूठे लांछन के कारण समाप्त हो जाता है। बिंदी पर ससुराल वाले चोरी का झूठा आरोप करते है, तब वह घर छोड़कर चली जाती है, कुछ वर्ष बाद मौनव्रत धारिणी सिध्दि माँ बनी बिंदी उस घटना के तीस वर्ष बाद, श्रीनाथ से स्लेट पर लिखकर बताती है --' मैंने आज तक जीवन में पराई वस्तु का कभी स्पर्श भी नहीं किया है, मैं निर्दोष थी, अब मैं जहाँ हूँ, वहाँ से लौटना असंभव है। अब न मेरा कोई अतीत है, न कि वर्तमान, न भविष्य, तुम चले जाओ। और फिर कभी यहाँ न आना। ' [२]

दांपत्य जीवन में महत्वाकांक्षा से निर्मित समस्याएँ --

शिवानी की 'प्रतिशोध' कहानी की नायिका अत्यंत महत्वाकांक्षी है। उसका यह गुण दुर्गुण की हद तक पहुँचकर उसका दांपत्य जीवन बिखरे देता है।

पारिवारिक समस्याएँ --

शिवानी की कहानियों में पारिवारिक समस्याएँ निर्धनता, अज्ञानता, अशिक्षा स्वार्थ-लिप्सा, महत्वाकांक्षा, सौन्दर्य, अनमेल विवाह, दहेज आदि के कारण उत्पन्न हुई दिखाई देती हैं। कुछ कहानियों में निर्मित पारिवारिक समस्याएँ नारियों द्वारा ही उत्पन्न हुई हैं। नारी ही नारी की दुश्मन बनी दिखाई देती है।

पारिवारिक जीवन से तात्पर्य है पति पत्नी, माता-पिता, भाई-बहन आदि सब परिवार का सम्मिलित जीवन। पारिवारिक समस्याएँ परिवार के किसी न किसी सदस्य के कारण निर्माण होती हैं।

---

१ अपराधिनी - चांद - पृ.सं.८८।

२ धर्मयुग - अक्तूबर - १९९० - 'चांचरी - कथा।

शिवानी की पहाड़ी जीवन से संबंधित कहानियाँ में जैसे 'नथ' 'जा रे चकुली' अलख माई', 'लाटी' में पारिवारिक समस्याओं के कारण नायिका का दांपत्य जीवन दुखमय बन जाता है।

पारिवारिक समस्या का सबसे गंभीर रुप हमें 'भिक्षुणी' कहानी में दिखाई देता है। कहानी की नायिका 'किकी' के सौंदर्य से ईर्ष्यालु ननद अपनी माँ को साथ लेकर इसे इतना सताती है कि उसके परिणाम स्वरुप 'किकी' को अपनी गृहस्थी का त्याग तक करना पड़ता है।

'बन्द घड़ी' में पारिवारिक समस्याओं से त्रस्त पति-पत्नी अंत में समाधान ढूंढ निकालने में सफल हो जाते है।